RNI Reg No MPHIN/2007/27127

ISSN: 3048-9954 (Print)

अहिंसा, आगम और विज्ञान से आलोकित श्रेष्ठतम पत्रिका

भाव विज्ञान

BHAV VIGYAN

वीर निर्वाण संवत् - 2551

अश्विन शुक्ल, वि.सं. 2082, सितम्बर 2025

अंक : तिहत्तर

वर्ष : उन्नीस

उदयनगर इंदौर में पावन वर्षायोग 2025 हेतु गुरुदेव की मंगल आगवानी करते भक्तगण।

2000 कि.मी. दूर तमिलनाडु से पधारे भक्तों को मिला गुरुदेव की आहारचर्या का महा सौभाग्य।

पर्यूषण पर्व के समापन पर विशाल रथयात्रा में मिला आचार्य श्री ससंघ का मंगल सान्निध्य।

इंदौर पत्रकार भानुकुमार जैन का सम्मान करती हुई उदयनगर जैन समाज, इंदौर।

दशलक्षण एवं सोलहकारण पर्व के समापन पर उपवास करने वाले श्रावकगण आचार्य भगवंत का मंगल आशीर्वाद प्राप्त करते हुये।

षोडसकारण पर्व एवं दशलक्षण पर्व के दौरान उपवास, व्रत आदि ग्रहण करते श्राविकाएँ।

श्रावक साधना संस्कार शिविर 2025, इंदौर में दशलक्षण पर्व के दौरान श्रावक-श्राविकायें।

श्रावक साधना संस्कार शिविर 2025 में प्रतिक्रमण एवं शंका समाधान में उपस्थित शिविरार्थीगण।

आशीर्वाद व प्रेरणा
संत शिरोमणि आचार्यश्री 108
विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित
आचार्यश्री 108 आर्जवसागर जी महाराज।

• परामर्शदाता •
प्राचार्य डॉ. पं. शीतलचंद जैन, जयपुर मो. 9414783707
प्रो. डॉ. ऋषभचंद जैन, एकलव्य यूनिवर्सिटी, दमोह मो.: 9431441951

। सम्पादक ।
डॉ. अजित कुमार जैन
MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003 मो. : 7222963457, व्हाट्सएप: 9425601161
email : drajitjn@aarjavvani.com

• प्रबंध सम्पादक •
इंजीनियर शोभित जैन, एम. टेक.
'आर्जव छाया', पारस नगर, दमोह मो. 8989459635
email : ershobhitjn@aarjavvani.com

• संपादक मंडल •
कुलपति **डॉ. वी.के. जैन, सह-संपादक,** तीर्थंकर महावीर यूनिवर्सिटी, दिल्ली रोड, मुरादाबाद (उ.प्र.) मो.: 9997692191
email : drvkjn@aarjavvani.com

बहिन इंजी. ऋषिका जैन, सह-संपादक
आर्जवछाया, पारस नगर, सागर नाका, दमोह (म.प्र.)
email : brrisheekajn@aarjavvani.com

प्रोफेसर. डॉ. सुधीर जैन, सह-संपादक
85, डी के कॉटेज, बावड़ियाकला, भोपाल
email : profdrsudhirjn@aarjavvani.com

पं. जय कुमार 'निशांत', सह-सम्पादक
पपोरा चौराहा, टीकमगढ़
email : ptjaynishant@aarjavvani.com

डॉ. संजय जैन (एडवोकेट), सह-संपादक
179, समर्थ सिटी-1, गोम्मटगिरी के पास, इंदौर-459112
email : drsanjayjn@aarjavvani.com

डॉ. श्रीमती अल्पना जैन (मोदी), सह-सम्पादक
गणेश कॉलोनी, नया बाजार, ग्वालियर-474009
email : dralpnamodi@aarjavvani.com

इंजी. महेन्द्र कुमार जैन, सह-संपादक
132, डी के कॉटेज, बावड़ियाकला, भोपाल-462039
email : engmahendrajn@aarjavvani.com

• प्रकाशक •
श्रीमती सुषमा जैन धर्मपत्नी डॉ. अजित जैन
MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003 मो.: 9479978084
email : sushmajn@aarjavvani.com
वेब साइट : **www.aarjavvani.com**
email : bhav.vigyan@aarjavvani.com

विषय : धार्मिक पत्रिका | प्रथम प्रकाशन वर्ष : 2007 | भाषा : हिन्दी | प्रारूप : अहिंसा एवं जैन धर्म से संबंधित आलेख
RNI Reg No MPHIN/2007/27127 **ISSN: 3048-9954 (Print)**

त्रैमासिक
भाव विज्ञान
(BHAV VIGYAN)

वर्ष-उन्नीस
अंक - तिहत्तर

पल्लव दर्शिका

विषय वस्तु एवं लेखक		पृष्ठ
1. आर्जव कविताओं में भाषा वैशिष्ट्य और शिक्षायें	-डॉ. हनुमान सिंह गुर्जर	2
2. सदाचार सूक्ति काव्य - आहारौषध दृश्य का विवेचन	-डॉ. अरविंद जैन	12
3. आचार्य श्री आर्जवसागर जी के काव्य सौन्दर्य में धर्म प्रभावना के गुण	-पं.लालचन्द्र जैन 'राकेश'	30
4. समाचार		37
5. विद्वत् संगोष्ठी- आमंत्रित विद्वान सूची		40

लेखक एवं उनके विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
भाव विज्ञान से संबंधित समस्त निर्णयों/न्यायों के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल ही मान्य होगा।

आर्जव कविताओं में भाषा वैशिष्ट्य और शिक्षायें

-डॉ. हनुमान सिंह गुर्जर

(सी.ए., एम.बी.ए.,एल.एल.एम., पीएच.डी, एम.कॉम, डी.एल.एल.)

नई-नई भाषाओं को सीखने की तीव्र अभिलाषा के फलस्वरूप आचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज बहुभाषाविज्ञ हैं। अनेक वर्ष महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु एवं गुजरात आदि प्रांतों में विहार करते हुए न केवल वहां की भाषाएं सीखीं अपितु उनमें दक्षता प्राप्त कर भिन्न-भिन्न, समयोचित, धार्मिक, आध्यात्मिक या क्षेत्रीय कविताओं की छंदबद्ध, तुकांत और अतुकांत आदि रूप से रचनाएं भी की हैं। आचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज रचित ''आर्जव कविताओं'' की भाषा और उसकी शैक्षिक विशेषताओं पर लेख में व्यापक विचार प्रकट किए गये हैं।

-संपादकीय

आचार्य श्री 108 आर्जवसागर जी महाराज द्वारा रचित आर्जव कविताओं में उनके द्वारा रचित और प्रथमतः वर्ष 2014 में प्रकाशित कृति ''आर्जव कविताएँ'' के साथ-साथ आचार्य श्री द्वारा रचित अन्य काव्य कृतियों में रचित एवं प्रकाशित कविताओं को लिया गया है।

आचार्य आर्जवसागर जी गुरुदेव द्वारा रचित सभी कृतियों में ''आर्जव कविताएँ'' नामक काव्य ग्रंथ प्रमुख है। संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के परम शिष्य धर्म प्रभावक आध्यात्म योगी ऋषिवर श्री 108 आर्जवसागर जी महाराज के कर कमलों से विरचित काव्य ग्रंथ ''आर्जव कविताएँ'' यथा नाम तथा गुण की कहावत को चरित्रार्थ करती है। यद्यपि यह काव्य ग्रंथ सरल और सहज भाषा में लिखा गया है पर उसमें विभिन्न जटिल विषयों का समावेश किया गया है। ग्रंथ को बोधिलाभ (आध्यात्मिक कविताएँ), सुखानुभव (क्षेत्रीय कविताएँ), बचपन की कविताएँ और स्नेहल छटा (विभिन्न भाषीय कविताएँ) नामक चार भागों में विभक्त किया गया है।

ग्रंथ की सहज और सरल अभिव्यक्ति तथा उसमें सम्मिलित किये गये विभिन्न विषयों की व्यापकता की दृष्टि से उसके भाषा वैशिष्टय और शिक्षा की समीक्षा करना कोई आसान काम नहीं है। फिर भी मेरी अल्पबुद्धि से जितना बन पड़ा है उतना करने का प्रयास किया गया है।

भाषा वैशिष्ट्य-

भाषा वैशिष्टय का अर्थ किसी ग्रंथ में प्रयुक्त की गई भाषा की विशेषताओं, खासियत से लिया जाता है जो उसे ग्रंथ का उसी भाषा में लिखे गये अन्य ग्रंथों से अन्तर बताकर उसकी श्रेष्ठता साबित करता है। इस अर्थ में आलोच्य ग्रंथ ''आर्जव कविताएँ'' में अनेक भाषा विशिष्टतायें लिये हुये हैं। जिनका वर्णन संक्षेप में इस प्रकार हैं-

1. भाषायी विविधता-

आचार्य श्री के काव्य ग्रंथ में ऋषिवर ने अनेक भाषाओं में रचना कर न केवल अपने बहुभाषी होने का रहस्योद्घाटन किया है बल्कि उन्होंने अपने उस प्रेम को भी प्रकाशित किया है जिसमें वे देश के उत्तर और दक्षिण

में तथा पूर्व और पश्चिम में कोई भेद स्वीकार नहीं करते हैं। एक महर्षि की यह विशेषता होती है कि वे सम्पूर्ण जीव जगत को एक समान देखते हैं। उनमें जाति, रंग, देश और काल से प्राणियों में भेद करना सम्भव ही नहीं हो पाता है। यही बात आचार्य श्री के लेखन में पुष्ट होता है। इस दृष्टि से आचार्य श्री के काव्य ग्रंथ की निम्न भाषागत विशेषताएँ परिलखित होती है-

1.अनेक भाषाओं में पद्य रचना-

आचार्य श्री का यह काव्य ग्रंथ ''आर्जव कविताएँ'' सम्पूर्ण भारत देश की भाषाओं का काव्य संगम है। इसमें आचार्य श्री ने अंग्रेजी, मराठी, गुजराती, कन्नड़, तमिल में 36 कविताएँ लिखकर मानव मात्र के कल्याण के लिए प्रस्तुत की है।

2. विषयों की विविधता-

आचार्य श्री ने मानव जीवन और मानव धर्म के प्रत्येक पहलू और विषय को अपनी लेखनी का विषय बनाया है और शायद ही जीवन का कोई ऐसा मुद्दा हो जिसका हल इस काव्य संग्रह में उपलब्ध नहीं करवाया गया हो।

इस संग्रह में जहाँ प्रथम भाव में बोधिलाभ के लिये आध्यात्मिक कविताओं को संकलित किया गया है। वहीं ग्रंथ के द्वितीय भाग में क्षेत्रीय कविताएँ शीर्षक से अनेक तीर्थ स्थानों की इतिहास परक धर्म विवेचना करते हुये उनकी स्तुति की है। जिनका उपयोग तीर्थ पूजा व वंदना के कार्य के लिये बहुतायत में किया जा रहा है।

ग्रंथ के तृतीय भाग में आचार्य श्री ने ''बचपन की कविताएँ'' शीर्षक से 11 लोकोपयोगी और धर्ममय रचनायें संकलित की हैं जिनमें धर्म, महाव्रतों और चारों पुरुषार्थों का सम्यक् वर्णन मिलता है। यह कविताएँ कम उम्र के श्रावकों के बीच अधिक लोकप्रिय है और उसी को रेखांकित करते हुये उनका नामकरण भी उसी प्रकार किया गया है। ये ऋषिवर की काव्य भाषागत विशेषता का एक अनुपम उदाहरण है कि न केवल बच्चे बल्कि ज्ञान के क्षेत्र में नये-नये बड़ी उम्र के लिये ये कविताएँ समान रूप से श्रेयकर हैं।

3. गुरु की महिमा-

इस ग्रंथ की एक शिल्प विशेषता है कि इसमें कविवर ने मुक्त कण्ठ से अपने गुरु आचार्य विद्यासागर की स्तुति की है और उनके भी गुरु महाराजों का जिक्र कर उनके प्रति अपनी स्वाभाविक कृतज्ञता प्रकट की है।

4. व्यंग्य और नसीहत एक साथ-

काव्य ग्रंथ ''आर्जव कविताएँ'' पढ़ने पर आभास होता है कि इस ग्रंथ में आचार्य श्री ने अनेक स्थानों पर वर्तमान जीवन और उसकी धारणाओं पर व्यंग्य कसा है। यह इस ग्रंथ की महिमा ही है कि कविराज ने व्यंग्य कर पाठक को निराश्रित नहीं छोड़ा है। उसे परामर्श, सलाह और निर्देश देकर संसार सागर से निजात दिलवाने का भरसक प्रयास किया गया है।

5. छन्द-

आलोच्य ग्रंथ में आचार्य श्री की कविताओं में मिश्रित छन्दों का प्रयोग हुआ है। ज्यादातर पद्य ''ज्ञानोदय

छंद'' में लिखे गये हैं पर अनेक कविताएँ तुकान्त और अतुकान्त शैली में भी लिखी गई है। आचार्य श्री की कविताओं में छंद चयन से ज्यादा इस ग्रंथ में सम्मिलित की गई कविताएँ भाव प्रधान और संदेश प्रधान हैं। छन्द की दृष्टि से आचार्य श्री द्वारा रचित अनेक कविताएँ ''नई कविता'' श्रेणी की अनुपम और अनुकरणीय उदाहरण बन पड़ी हैं।

2. उपमायें और अलंकार

''आर्जव कविताएँ'' में अनेक शब्दों का प्रयोग अनेक स्थानों पर विशिष्टता से किया जाकर भाषा को प्रभावोत्पादक और रुचिकर बनाने का प्रयास किया गया है। यह कवि की स्वभाविक प्रवृत्ति होती है कि वे समानता और अन्तर बताने के लिये प्रतीकात्मक शब्दों का प्रयोग कर अपने कविता को अधिक सार्थक बनाने में सफल रहे हैं उन्होंने बड़े भी प्रभावशाली ढंग से निम्न अलंकार और उपमाओं का सटीक प्रयोग किया है।

1. गगनचुम्बी-

अपनी कविता ''बड़े बाबा की याद में'' कविहृदय ऋषि ने गगनचुम्बी की उपमा का निम्न प्रकार से सफल उपयोग किया है-

''पर्वत के ऊपर भी देखो,
गगन चुम्बी उत्तुंग शिखर है।''[1]

इसी प्रकार इस ग्रंथ के इसी भाग में एक अन्य कविता ''नयी परम्परा'' में भी उन्होंने गगनचुम्बी उपमा का सटीक व्यंग्यात्मक प्रयोग किया है-

''अब दिन में भोजन का वक्त नहीं बचा,
क्योंकि धन की कमाई ने गगन चूमा है''[2]

2. तारणहार-

काव्य ग्रंथ की श्रेष्ठ कविताओं में से एक ''मेरा नमन करो स्वीकार'' में ऋषि ने अपने गुरु आचार्य श्री विद्यासागर के प्रति अनेक प्रकार से अपनी कृतज्ञता ज्ञापित की है। उसी क्रम में उन्होंने अपने गुरु को संसार सागर से पार उतारने वाले जहाज ''तारणहार'' की उपमा का प्रयोग किया है-

''संसार से पार लगाने हेतु,
तुम ही हो तारण हार।''[3]

3. ध्यान में उतरना-

''साधुता कब आती है'' कविता में ऋषि ने ध्यान में उतर जाने को साधु का लक्षण बताते हुये साधु शब्द की व्याख्या प्रस्तुत की है। उन्होंने साधु का अर्थ बताते हुये लिखा है कि-

''स्+आ+ध्+उ
स अर्थात् समता, आ अर्थात् आत्मा, ध् अर्थात् ध्यान उ अर्थात् उपयोग जो समता के द्वारा आत्मा के ध्यान में उतरता है।''[4]

4. धर्म का श्रृंगार-

"पावन संस्कार" नामक कविता में आचार्य श्री ने बहुत सुन्दर तरीके से लाक्षणिक उपमा देते धर्म का व्यक्ति की तरह से श्रृंगार करने की बात कही है कि-

"मानव का बचपन जब
धर्म से जुड़ता है
पापों से बचकर मन
पुण्य तरफ मुड़ता है
तब बालक के जीवन में
होता है धर्म का श्रृंगार
यही है पावन संस्कार।"[5]

5. ब्रह्मचर्य में खो गये-

आचार्य श्री अभिव्यक्ति का कोई सानी नहीं है। उन्होंने इस ग्रंथ में विषय की सम्पुष्टता के लिये अनेक प्रयोग किये हैं। उससे विषय की स्पष्ट व्याख्या सम्भव हुई है। उन्होंने अपनी कविता "ना-अटक" ब्रह्मचर्य में खोने का सुन्दरतम प्रयोग किया है-

"वे वैरागी बन
बेलगांव जिले से
स्व गृह से बेलगाम हो गये
और आचार्य देशभूषण के संघ में जा
त्याग और ब्रह्मचर्य में खो गये"[6]

6. पुद्‌गल का ही पुद्‌गल भोगे-

'मुक्ति को जाना नहीं" नामक कविता में जैन धर्म के एक महत्वपूर्ण तात्त्विक सिद्धान्त को आचार्य श्री ने बातों ही बातों में व्यंग्यात्मक शैली में सरल शब्दों में समझा दिया है-

पुद्‌गल को ही पुद्‌गल भोगे,
कहते जीवन बीता है"[7]

7. अज्ञानी का मन-

"परिवर्तन" नामक कविता में कवि ने अज्ञानी पर प्रकाश डाला है। उन्होंने कहा है कि-

"पर्यायों का परिवर्तन लख
अज्ञानी का रोता मन
जड़ पुद्‌गल के विषय राग में
बीतें जीवन, सूखे तन"[8]

8. गहराई में उतरना-

गहराई और उसके प्रति लक्ष्य निर्धारित करते हुये कविराज ने लिखा है कि-

''बहुत पढ़ने से,
उतना ही नहीं,
लेकिन,
बहुत बार पढ़ने से,
इतना ही नहीं!
उसके भीतर उतरने से
ज्ञान का विकास
क्षयोपशम संभव है''[9]

9. दोषों का कोश-

''सागर में समपर्ण व अमरता का वरण'' कविता में पर्वत पर गिरती बूँदों से लेकर पर्वत की छटा और कृषि या ऋषि जीवन की सार्थकता बताते हुये बहते रहने को संस्कृति का पोषक कहा है। उन्हीं के शब्दों में-

''ज्ञानियों की सीख है
लगती भी ठीक है,
बहना ही संस्कृति है।
रुकना सो विकृति है।
एक जगह जो मोह कर
रुककर थम जाता है,
दोषों का कोश बन
जग में न भाता है।''[10]

10. गुण का आलिंगन-

आचार्य श्री न ''पर में सुख ढूँढ़ा'' नामक कविता में एक अलग तरह का प्रयोग किया है। उन्होंने संसार के सुखों के प्रति जनमानस की आसक्ति पर व्यंग्य करते हुये लिखा है कि-

रमणी, रानी देवी में जो,
अनादि से थी सुख की आश।
छेड़ी इक दिन, आत्मरमण कर,
गुण का आलिंगन अब प्यास॥ 5 ॥1[11]

11. शिथिल हुई संधिया-

सांसारिक मानव और उसकी संसार भोग की प्रवृत्ति में व्यंग्य करते हुये आचार्य श्री ने कहा है कि-

''सवार थी मानवों पर जो
निद्रा देवी

उसके पैरों की शिथिल हुई सन्धियाँ
और मानव की
सोती हुई जगी इन्द्रियाँ
भानु के प्रभाव से बस''[12]

12.विद्यासागर की उपज-

ऋषिवर ने अत्यन्त आलंकारिक भाषा को प्रयोग करते हुये अपने गुरु महाराज विद्यासागर जी के गुरुवर महर्षि ज्ञानसागर की महिमा गाई है और उसमें लिखा है कि-

बस.... यही है अपनी परम्परा
जो कि गुरुणां गुरु ज्ञानसागर से
गुरुवर विद्यासागर की उपज
जिनसे शिष्यों का प्रशिष्यों का पोषण होता है सहज।''[13]

13. संसार से मुख मोड़ना-

परम तपस्वी ऋषि आचार्य श्री आर्जवसागर ने अपने गुरु जी के सफल तपस्वी जीवन को उनके भी गुरु जी द्वारा पैदा की गई वैराग्य भावना की अनुमोदन करते हुये और उनका आभार जताते हुये ''किया स्वप्न साकार'' नामक कविता में लिखा है कि-

''किसको मालूम था? कि,
माँ श्रीमति का प्यारा
पिता मलप्पा का दुलारा
आचार्य शंतिसागर की देशना सुन
संसार से मुख मोड़ेगा
और...
संग, परिवार को छोड़
नाता वैराग्य से जोड़ेगा, और...
रूप त्यागी का ग्रहण करेगा।''[14]

14. साधन और साध्य

आचार्य श्री की कविता ''पावन संस्कार'' एक कालजयी रचना है जिसमें उन्होंने साधन और साध्य के सम्यक् विवेचन के साथ-साथ साधक के लिए निर्देश प्रदान किये है कि-

साधक का जीवन जब
सल्लेखन से जुड़ता है
संसार से हटकर मन

अध्यात्म तरफ मुड़ता है
तब साधक की आतम में
समरसता होती है साकार
यही है पावन संस्कार।
यही है पावन संस्कार।''[15]

15. सारे जग में छा गये-

गुणगान के लिये एक तपस्वी के लिए भगवान के बराबर ही उसका गुरु होता है। आचार्य श्री ने ''ना अटक'' कविता के माध्यम से इसे प्रकट किया है जिसमें वे भाव विभोर होकर लिखते हैं कि-

''न अटके वे कर्नाटक में वरन्
राजस्थान में जा
ज्ञानसागर में समा गये
विद्याधर से विद्यासागर बन
सारे जग में छा गये
सबके मन को भा गये।''[16]

16. दुर्लभ होता ज्ञानी संग-

वैसे तो पूरे काव्य में जहाँ भी सम्भव हुआ आचार्य श्री ने संसार और सांसारिक विषयों की नश्वरता का बेजोड़ वर्णन कर मानव को उनसे दूर रहने की सलाह दी है पर ''मानस तरंग'' कविता में उन्होंने मानव जीवन की सफलता के लिए आवश्यक ज्ञानी की संगत को बड़े ही प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है। उन्होंने इस कविता में लिखा है कि-

''दुर्लभ होता ज्ञानी संग,
शास्त्र ज्ञान की बहती गंग,
स्वार्थ जगत से आये तंग,
ऊँचाई छूती मानस तरंग।''[17]

17. नाम की चाह-

सांसारिक मानव जीवन की विद्रुपताओं में मुख्य अहंकार पर चोट करते हुये आचार्य श्री ने अपनी कविता ''मुक्ति को जना नहीं'' में बड़े ही अच्छे शब्दों के चयन के साथ इस पर आघात किया है। उन्होंने इस कविता में लिखा है कि-

''दान भी जो दे दिया
नाम को छोड़ा नहीं
ख्याति को तो पा लिया
पर साथ कुछ जाना नहीं

नाम की इस चाह में
मुक्ति को जाना नहीं''[18]

18. अन्यायी की सम्पदा-

आचार्य श्री ने मानव मात्र को चेताते हुये अन्यायी की सम्पदा नामक नया पद विरचित किया है। उन्होंने बड़े ही प्रभावोत्पाद ढंग से इस सम्पदा के लिये निषेध किया है और लिखा है कि-

''अन्यायी की सम्पदा वह
अधिक समय न टिकती है
अवसर पा एक दिन वह
समूल ही विनसती है''[19]

19. जग से पार होने की छटपटाहट-

आचार्य श्री संसार की नि:सारता का कदम-कदम पर उल्लेख किया है और धर्म की महत्ता को रेखांकित किया है। धर्म के प्रति मानव की प्यास का आलंकारिक प्रयोग करते हुये आचार्य श्री ने ''मैंने देखा है'' नामक कविता में लखा है कि-

''जग से पार होने को,
दु:ख का खार धोने को,
धर्म की प्यास से प्यासे,
मानव छटपटाते मैंने देखा है।''[20]

20. स्वतंत्र होना सीख लो-

आचार्य श्री ने मानवता को फिर परामार्श दिया है। उन्होंने ''स्वतंत्र होना सीख लो'' नामक अपनी कविता में लिखा है कि-

''अधर्म रूप हिंसा तज, धर्म करना सीख लो
नहीं सुख है बंधन में, स्वतंत्र होना सीख लो।''

21. असम्यक् परम्पराओं का निषेध-

आचार्य श्री विदेशी जीवन शैली के दोषों को उजागर करते रहते हैं और भारतीय जीवन परम्परा अपनाने पर जोर देते हैं। इस ग्रंथ में भी उनका मत उन्होंने अपनी कविता ''नयी परम्परा'' से व्यंग्य मिश्रित उपदेश की भाषा में स्पष्ट किया है जैसे-

''और काटते हैं केक, बाँटते हैं, मिठाईयाँ?
और क्यो बुझाते मोबत्तियाँ?
क्या यही है सही धर्म की परम्परा?''[21]

22. भ्रम की सहज व्याख्या-

आचार्य श्री के काव्य शिल्प की यह सहज वृत्ति है कि वे जटिल से जटिल विषय पर भी अपने भाव

सहज ढंग से रख देते हैं पर उनका प्रभाव अत्याधिक होता है। अपनी कविता ''ज्ञान दिवाकर की महिमा'' में आचार्य श्री लिखते हैं कि-

''चाँद की चाँदनी को देख
जो चकवा-चकवी
हुये थे भ्रमित कि
यही दिवाकर तो नहीं
तेरा रूप देख
उनका भ्रम दूर हुआ।''[22]

इस प्रकार आचार्य श्री के काव्य ग्रंथ ''आर्जव कविताएँ'' में अनेकानेक काव्य शिल्पों का, काव्य विशेषताओं का और एक अनुपम काव्य वैशिष्ट्य प्रकट हुआ है जिसका आंशिक उल्लेख ही ऊपर किया गया है। उसके अतिरिक्त भी इस काव्य ग्रंथ की और भी विस्तृत व्याख्या की अपेक्षा शेष रह जाती है।

3. शिक्षायें

आचार्य श्री द्वारा परिणित काव्य ग्रंथ ''आर्जव कविताएँ'' मानव जीवन के लिये कई शिक्षायें देती हैं। इन कविताओं के पाठन से यह स्पष्ट होता है कि ऋषिवर का मन किस प्रकार से मानव जीवन के विकारों का निवारण कर मानव मात्र के कल्याण की उत्कट भावना से अभिप्रेरित है। इस ग्रंथ में जीवन के प्रत्येक पहलू पर कल्याण का परामर्श दिया गया है। ग्रंथ में दी गई एक-एक शिक्षा अनमोल है। ग्रंथ में दी गई शिक्षाओं में निम्न प्रमुख है-

1. विनय-

आचार्य श्री ने स्वयं ने कविता ''ज्ञान दिवाकर की महिमा'' में लिखा है कि-

''सृजन करता हूँ कविता का,
जिनदेव को शीश नवाकर।
मिले सहारा जिनवाणी का।
गुरुदेव का आशीष पाकर।।[23]

यह इस बात का स्पष्ट निर्देश है कि विनय करना बहुत जरूरी है। आचार्य श्री के अन्य ग्रंथों में तो विनयसम्पन्नता पर बहुत लिखा गया है और विनयसम्पन्नता को एक व्यापक आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया गया है। वहीं परामर्श ऋषिवर ने मानव मात्र के कल्याण के लिये इस ग्रंथ में भी दिया गया है।

2. पंच परमेष्ठी का गुणगान-

आचार्य श्री के इस ग्रंथ में अनेकानेक जगहों पर उन स्वयं ने अपने गुरु महाराज जी का, उनके गुरु भगवंतों का और तीर्थंकरों का मुक्त कण्ठ से गुणगान किया है जो हमें यह शिक्षा देता है कि हमें अपने से वरिष्ठों को यथोचित आभार जताना चाहिये और उनके द्वारा हमारे उपकारों को कभी नहीं भूलना चाहिए।

3. पर में सुख ढूँढ़ने से मनाही-

पर में सुख ढूँढ़ने का आचार्य श्री से मना किया है और इसे इतना महत्व दिया है कि उसके लिये उन्होंने

पूरी एक कविता ''पर में सुख ढूँढ़ा'' लिखी है जो इस ग्रंथ में शामिल की गई है। उस कविता का एक-एक शब्द उल्लेखनीय है पर स्थान की सीमा को देखते हुये उसमें से कुछ उदाहरण ही यहाँ दिये जा रहे हैं-

''पर में सुख मान आत्मा ने,
पर में ही सुख ढूँढा है,
जड़ में न चेतन को सुख है,
भ्रम में आतम भूला है।''
तरह-तरह के भोज्य सभी वे,
इस नत को खिलावाये थे।

फिर भी तन से धोखा खाकर,
नहीं सम्हल, जग पाये थे॥
आत्मरमण ही मोक्ष धाम का,
कर्म निर्जरा का साधन।
आत्मरमण ही लक्ष्य हमारा,
वही पूर्ण सुख है पावन॥''[24]

4. नई परम्परा से सावधान किया है-

आचार्य श्री की दृष्टि में नित नई परम्परायें अस्वाभाविक और दोषपूर्ण है। फास्ट फूट आदि को उपयोग में नहीं लेने के लिये तो आचार्य श्री जब तब मना करते ही रहते हैं। पर ''नयी परम्परा'' नामक अपनी कविता में आचार्य श्री ने विस्तार से नयी परम्पराओं का निषेध किया है जैसे उस कविता में से कुछ उदाहरण देखिये-

भव दुःखों के चक्रव्यूह में,
सदा फँसती नयी परम्परा।
हमने सुनी है नेमिनाथ की कथा,
जिनने नहीं सही थी प्राणियों की व्यथा॥

चमड़े के टोप, जाकिट पहिनने में न है लाज,
क्योंकि हमने स्वीकार ली है विदेशी परम्परा।
भव दुःखों के चक्रव्यूह में,
सदा फँसती नयी परम्परा।[25]

5. इन्द्रिय निरोध-

आचार्य श्री ने अपनी कविता ''उपाय राग-रंग से बचने का'' में मानव जीवन के लिये कई उपदेश समाहित किये हैं। उन्होंने मानव जीवन के दुःखों के मूल पर प्रहार किया है और लिखा है कि-

इन्द्रियों को अपने
काबू में रखना
बस... यही एक उपाय
या रास्ता है

राग-रंग से बचने का
शुद्ध भाव करने का
जितेन्द्रिय बनने का....''[26]

व्यवहार सतर्कता से करना, हर कर्म का फल रक्षित होगा।
बाधक कहीं बन जावे जो, ना बीज ऐसा बोना चाहिये॥
साध्य परीक्षा लेते हैं, यह पूर्ण योग्यता चाहता है।
हर कोण से जीवन हो विकसित, ना खाली कोई कोना चाहिये॥
एक ही साधन होता है, किसी एक लक्ष्य को पाने का।
गलत काम में समय लगाकर, ना वक्त हमें खोना चाहिये॥
सच्चा मार्ग दिखाकर पहले, फिर चलना भी सिखला दे जो।
परम पूज्य आर्जवसागर सा, एक गुरु अवश्य होना चाहिये॥

संदर्भ ग्रंथ सूची-

आचार्य आर्जवसागर; आर्जव कविताएँ; 1-26

सदाचार सूक्ति काव्य - आहारौषध दृश्य का विवेचन

डॉ. अरविंद जैन, बी.ए. एम.एस. (गोल्ड मेडलिस्ट)

लेख में आचार्यश्री आर्जवसागर जी महाराज द्वारा रचित ''सदाचार सूक्ति काव्य'' के आहारौषध अध्याय पर चिकित्सकीय दृष्टि से विवेचना की गई है।

-संपादकीय

आचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज द्वारा रचित सदाचार सूक्ति काव्य एवं आध्यात्मिक कविताओं नामक पुस्तक में वर्णित 'आहारौषध दृश्य' में जो सरल भाषा में सूक्तियां/उपदेश लिखे गए हैं उन पर आचार्य श्री आर्जवसागर जी द्वारा दिनांक 7 अप्रैल 2023 को श्री दिगम्बर जैन मंदिर जी गढ़ा जबलपुर में 'स्वस्थ्य एवं सुखी जीवन के अनमोल सूत्र' पुस्तक लेखक डॉक्टर अरविन्द जैन भोपाल द्वारा भेंट स्वरूप आशीर्वाद प्राप्त किया. चर्चा के दौरान आचार्य श्री ने सदाचार सूक्ति काव्य एवं आध्यात्मिक कविताओं नामक पुस्तक भेंट कर उन्होंने मुझको 'आहारौषध दृश्य' पर चिकित्स्कीय दृष्टि से उन सूक्तियों पर विवेचना करने का आदेश दिया, इस दौरान मुझे गढ़ंत सामग्री जैसे आलू प्याज़ लहसुन आदि का त्याग करने की प्रतिज्ञा दी और मैंने ले ली।

इस दृश्य में आचार्य श्री के द्वारा 80 सूक्तियां लिखी गई हैं और उनका विवरण वैज्ञानिक, चिकित्स्कीय परिप्रेक्ष्य में लिखने का प्रयास करूँगा। इस समय मैं ईश्वर के साथ आचार्यश्री विद्यासागर जी एवं आचार्य श्री आर्जवसागर जी एवं समस्त संघों का, आर्यिकाओं के आशीर्वाद का अभिलाषी रहूँगा जिससे यह मेरा कार्य निर्विघ्न पूर्ण हो ।

पथ्य - अपथ्य में, सुख व खेद हो।
हित व अहित का, आयु -वेद (ज्ञान) हो ॥[1]

भावार्थ- कल्याणकारक ग्रन्थ में इसी बात की पुष्टि की गई हैं। वैद्य शास्त्र को जानने वाले, इस शास्त्र को, आयुर्वेद भी कहते हैं। वेद शब्द विद धातु से बनता हैं। मूल धातु का अर्थ, ज्ञान, विचार और लाभ होता हैं। इस प्रकार धातु के अनेकार्थ होने से यहाँ वेद शब्द का अर्थ, वस्तु का यथार्थ स्वरूप को बताने वाला हैं। इस वेद के पीछे 'आयुः' शब्द जोड़ दिया जाय तो आयुर्वेद बनता हैं, जिससे स्पष्ट होता हैं कि जो हितायु, अहितायु, सुखायु दुखायु इनके स्वरूप। आयुष्य लक्षण, आयुष्य प्रमाण, आयु के लिए हिताहित द्रव्य इत्यादि आयु सम्बन्धी यथार्थ स्वरूप को प्रतिपादन करता है उसका नाम आयुर्वेद है।

आयुर्वेद ग्रन्थ का मूल है-

हिताहितं सुखम दुखमायुस्तस्य हिताहितम मानं च तच्च यत्रोक्तमायुर्वेदः स उच्यते (चरक सूत्रस्थान 41)

जिस ग्रन्थ में (1) हित आयु (2)अहित आयु(3)सुख आयु (4) दुःख आयु इस चार प्रकार की आयु के लिए हित (पथ्य) अहित (अपथ्य) इस आयु का मान (प्रमाण और अप्रमाण)और आयु का स्वरुप बताया गया हैं, उसे आयुर्वेद शास्त्र कहा जाता हैं।

आहार, निद्रा, ब्रह्मचर्य में।
सजग स्वस्थ्य हो निजी-चर्य में ।।[2]

भावार्थ- आहार, निद्रा (स्वप्न)और ब्रह्मचर्य का उल्लेख आयुर्वेद ग्रन्थ में त्रय उपस्तम्भ के रूप में बताया है। इन तीनों का युक्तिपूर्वक सेवन करने से यह शरीर उपस्तंध (स्थिर) होकर जब तक संस्कारित रहता हैं तब तक वह बल, वर्ण, उपचय (वृद्धि) से उपचित होकर उचित रूप में रहता है. अहित वस्तुओं का सेवन न करना ही संस्कार है.

आहार को प्रधान माना गया है क्योंकि आहार से रस की उत्पत्ति, वातादि दोषों की उत्पत्ति और धातुओं का निर्माण होता हैं। आहार के अभाव में शरीर की स्थिति नहीं रह सकती। इसके बाद दूसरा स्थान निद्रा (स्वप्न) का है. यदि प्राणी नियमित रूप से अपने सभी कार्य यथाकाल उचित रूप से निद्रा का सेवन न करे तो स्वास्थ्य को हानि तथा मृत्यु तक सम्भाव्य है क्योंकि कार्य करने के बाद शारीरिक यंत्रों को विश्राम देने के लिए निद्रा की अत्यधिक आवश्यकता है इसके बाद तीसरा स्थान ब्रह्मचर्य का आता है। ब्रह्मचर्य का तात्पर्य शुक्र रक्षा है। आहार का सार शुक्र होता है। उसकी रक्षा से आहार का फल शरीर में होता है।

इन तीनों के पालन से मनुष्य सजग, अपने निजी चर्या में स्वस्थ्य रहता है। यह जीवन का मूलाधार है।

मंद, मध्य व तीक्ष्ण -अग्नि में।
योग्य - पाच्य हो जठराग्नि में।।[3]

हमारा पाचन मुख्य रूप से पंचाग्नि पर निर्भर करता है इसी को जठराग्नि भी कहते हैं। यह अग्नि यौवन, मध्यम और वृद्धावस्था में सम, विषम और तीक्षण होती है। वात आदि दोषों के प्रकोप से विषमाग्नि, तीक्षाग्नि मंदाग्नि इस प्रकार से विकृत होती है अर्थात वात से विषमाग्नि, पित्तप्रकोप से तीक्षाग्नि और कफ प्रकोप से मंदाग्नि होती है समाग्नि श्रेष्ठ और पाचन योग्य मानी जाती है।

भोजन हो तन -प्रकृति योग्य वह।
सात्विक-भोजन ही योगि योग्य वह।।[4]

मनुष्य को मात्रापूर्वक भोजन करना चाहिए। भोजन शब्द से यहाँ अशित, पीत, लीढ़ खादित इत्यादि पदार्थों का ग्रहण किया गया है क्योंकि आहिरयते अन्ननलिका यत्तदाहार: आहार की जो मात्रा भोजन करने वाले की प्रकृति में बाधा न पहुंचाते हुए यथासमय पच जाय उस व्यक्ति के लिए प्रमाणित मात्रा है। आहार तीन प्रकार के होते हैं-तामसिक, राजसिक स्वास्थ्य और मानसिक रूप से हानिकारक होते हैं जबकि सात्विक आहार सभी के लिए लाभप्रद होता है योगी, श्रावक श्रमण के लिए सात्विक भोजन मान्य है।

वृद्ध, जवां व बाल अवस्था।
प्रकृति देख ही दवा व्यवस्था।।[5]

रोग किसी भी व्यक्ति को और किसी भी उम्र में होता है। यानी गर्भावस्था से लेकर मृत्यु पर्यन्त तक रोग

ग्रस्त होने की संभावना बनी रहती है। इसके लिए श्रेष्ठ चिकित्सक को रोगी की प्रकृति यानी 7 प्रकृतियाँ वातज, पित्तज, कफज द्वन्दज और सन्निपतिक होती हैं। इसी प्रकार बाल अवस्था में कफज रोग होते हैं, जवान में पैत्तिक रोग और वृद्धावस्था में वातज रोगों की प्रबलता होती है। औषधि का सम्यक प्रयोग न केवल नाम, रूप और गुण के साथ प्रकृति अनुरूप होना चाहिए।

शाकाहारी, शुद्ध - विचार।
जीते जग में, देव - प्रकार॥ [6]

आहार यानी जो आरोग्यवर्धक हो और हानिरहित हो उसे आहार कहते हैं। जो आहार शांतिकारक और हानिरहित हो उसे शाकाहार कहते हैं। मानव एवं हिंसक पशु भी जन्म से शाकाहारी हैं पर मनुष्यों ने अपने स्वाद के लिए मांसाहार को अपनाया और उनमे पशुत्व प्रवत्ति होने से बहुत दुखी और रुग्ण हो रहे हैं। जिनको देवत्व जीवन जीना है उन्हें शाकाहार ही अपनाना होगा अन्य कोई विकल्प नहीं है।

दिन में खाते, भजते नाथ।
रहें निरोगी, सबके साथ॥ [7]

रात्रि भोजन का किसी भी ग्रन्थ में कोई स्थान नहीं है, यहाँ तक कि पशु पक्षी भी रात्रि भोजन नहीं करते। मानव विवेकी प्राणी है उसे दिन में सूर्य की किरणों के प्रकाश में आहार लेना चाहिए सूर्यास्त के बाद खाना खाना अनेकों बीमारियों के साथ जीव हिंसा को आमंत्रित करते हैं। हमें निरोगी रहने के लिए इनसे बचना चाहिए।

भोजन कर, झट न पढ़ना।
थोड़ा मन यह, खाली रखना॥ [8]

हर कार्य का समय और विधि निश्चित होना चाहिए जो इसका अनुपालन नहीं करता उन्हें सफलता नहीं मिलती। वैसे आजकल भोजन करते समय टी.वी. या मोबाइल देखने का चलन बढ़ता जा रहा है। इससे हम मनोयोग से खाना खाने पर ध्यान नहीं दे पा रहे हैं जो हमारे अनुकूल नहीं है। इसके अलावा देर रात खाना खाने के बाद पढ़ने, बैठने से हमारे अन्न की दिशा आमाशय की ओर होने से हमारे मष्तिष्क में एकाग्रता न होने से ग्रहण शक्ति कमजोर हो जाती है। इसके लिए आवश्यक है कि हमें भोजन के कुछ समय के बाद पठन-पाठन करना चाहिए।

गर्म-जल हो, सुपाच्य रहा है।
उबले; अमृत-वाच्य सखा है॥ [9]

वर्तमान में पेय पानी इतना अधिक संक्रमित मिल रहा है। नगर निगम द्वारा प्रदायित पानी में गन्दगी बहुत होती है। कुआं का जल भी कम होता जा रहा है। नलकूप का पानी भी संक्रमित होता है। पेट की बीमारियों का मुख्य कारण दूषित जल है। इससे बचाव का सुगम साधन गर्म जल जो कि संक्रमण रहित होने के साथ सुपाच्य होता है, शीघ्र पचने योग्य होता है। इसके अलावा यदि हम उबालकर पानी का उपयोग करते हैं तो वह पूर्ण रूप से संक्रमण रहित होने के साथ मित्रवत हमारे पाचन से व्यवहार रखता है और उबले पानी की मर्यादा भी बढ़ जाती है।

बिना न उबला, भोज्य कभी हो।
फिर बीमारी, कभी नहीं हो॥[10]

अन्न, साग, सब्जियां, फल आदि रसायनों के साथ संक्रमित होने के कारण साफ सफाई से आहार /भोजन बनना ही चाहिए। इसके अलावा भोजन को पका कर ही खाना चाहिए, पका हुआ भोजन हमारे आमाशय में रहने वाले पाचक पित्त, क्लेदक कफ और समान वायु के मिलने से शीघ्र पाचन को प्राप्त होता है। पाचन तंत्र स्वस्थ्य रहने से हमारे आहार से बनने वाले रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र सप्त धातुएं, त्रिदोष और 18 प्रकार के मल का सम अवस्था में रहने से हम विकृति यानी बीमारी को नहीं प्राप्त हो सकते हैं।

निज-प्रकृति का विचार करते।
सीमित खा, बीमार न पड़ते॥[11]

मनुष्य जन्म के समय से ही वातज, पित्तज और कफज प्रकृति का होता है। स्वस्थ्य रहने के लिए हर मनुष्य को अपनी प्रकृति के अनुसार भोजन करना चाहिए। जो मनुष्य पित्तज प्रकृति का है और वह पित्तजन्य सामग्री का सेवन करेगा तो वह उसे नुकसान करेगा इसका परीक्षण स्वयं करना चाहिए। जो सेवनीय और अनुकूल हो उसे ग्रहण करे। हमारे आमाशय को चार भाग में बांटकर आधा भाग भोजन करना चाहिए, एक चौथाई पानी के लिए और शेष खाली रखना स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होता है। आकंठ भोजन करने से अपच होने के कारण बीमारी होती हैं।

शाकाहारी भोजन होता।
शक्ति आये, भक्ति भी देता॥[12]

जो आहार आरोग्यवर्धक और शांतिकारक होगा वह शाकाहारी भोजन कहलाता है हमारे यहाँ प्राचीन कहावत है 'जैसा खाओगे अन्न, वैसा होगा मन, जैसा पीयेंगे पानी, वैसी होगी वाणी'। जो आहार शांतिकारक और शक्तिवर्धक होगा उससे मन में शांति और भक्ति में एकाग्रता आती है। संत महंत तो सात्विक भोजन ही करते हैं। जिन्हें भक्ति में शक्ति चाहिए उन्हें शाकाहार ही अपनाना होगा।

नहीं रोज पकवान सेवते।
बीमारी न कभी देखते॥[13]

हमारा भोज्य सुपाच्य और हल्का होना चाहिए। आजकल बाज़ार का होटल का खान-पान का चलन होने से बीमारियों की प्रचुरता बहुत है। कारण होटल में सबसे घटिया मिलावटी तेल, सामग्री का उपयोग किया जाता है। उसमें उपयोग करने वाला घी तेल लगातार गर्म उपयोग करने से वह जहरीला होकर खाने वाले बीमार होते हैं। दूसरा ये भोजन गरिष्ठ के साथ मैदा आदि दूषित सामग्री से बनकर खाने वालों को रुग्ण करते हैं। इसके बचाव का मुख्य साधन घी तेल आदि से निर्मित पकवानों से दूरी बनाकर रखे।

कम खाये, संतोष रखें जो।
मेहनत कर, न रोष करें वो॥[14]

अल्प आहार से आजतक कोई नहीं मरा और न मरता है। खाना संतुलित होना चाहिए। इसके साथ मानव में संतोष वृत्ति होने से भी वह सुखानुभूति करता है। जिस अनुपात में खाना खाया जाये उसी अनुपात में शरीरिक क्रियाएं करने से शरीर स्वस्थ्य और बलवान होता है। स्वस्थ्यता मानसिक और शरीरिक दोनों होना चाहिए। जहाँ संतोष सुखालय है वहीं क्रोध, असंतोष दुखालय है। आजकल मानसिक रोग की अधिकतया होने से मनुष्य दुखमय दिखाई देता है, संतोषी सदा सुखी रहता है।

मौसम जैसा, धान्य व फल हो।
सेवें; होवे भोज्य सफल हो॥[15]

हमारे देश में ग्रीष्म, वर्षा, शीत ऋतुएँ होती हैं और हमें ऋतु अनुसार अपनी दिनचर्या, आहारचर्या का पालन करना चाहिए। इनके पालन से हमारा स्वास्थ सुखी और निरोगी रहता है। ग्रीष्म ऋतु में हमें उष्ण प्रकृति के आहार, पेय का उपयोग नहीं करना चाहिए। वर्षा ऋतु में सूर्य का ताप कमजोर होने से अपचन की शिकायत होने से हल्का सुपाच्य भोजन करें और शीत ऋतु में अग्नि प्रदीप्त होने से पित्तवर्धक खाद्य संतुलित मात्रा में लेना चाहिए। हमें मौसमानुसार साग, सब्जी, फल, अन्न ग्रहण करना उपयुक्त होता है।

शोधे बिन न खायें सभी जन।
न पड़ते बीमार कभी जन॥[16]

हम समशीतोष्ण जलवायु में रहते हैं। हमारे यहाँ मौसमानुसार अन्न, दाल चावल आदि धोकर, साफ़ करके रखते हैं। अन्न दलहन में कुछ न कुछ नमी होने के कारण सूक्ष्म जीव दो इन्द्रिय, तीन इन्द्रिय जीव पैदा हो जाते हैं। इसी प्रकार कुछ साग सब्जियों में, सूखे मेवे में सूक्ष्म कीड़े उत्पन्न हो जाते हैं। इन जीवों का यदि धोखे से भक्षण से जलोदर जैसे रोग हो जाते हैं और सूक्ष्म जीवों की हिंसा का दोष लगता है। इससे जब आहार तैयार करते समय इन बातों का ध्यान रखना बहुत आवश्यक है जिससे हम जीव हिंसा के साथ स्वास्थ्य संरक्षण कर सकते हैं।

भोज्य-पथ्य में नहीं उल्लंघन।
बीमारी में, शोभे लंघन॥[17]

हमारा भोजन ऐसा होना चाहिए जो हमारे स्वास्थ्य के अनुकूल होवे। हमें हमेशा पथ्य कारक भोजन करना चाहिए यदि इस पथ्य के अनुरूप भोजन न होने से हमें अस्वस्थ्य होने के पूरे-पूरे अवसर होते हैं। यदि हम बीमार हो जाएं तो सबसे पहले हमें लंघन करना चाहिए। कहा भी है ज्वर में लंघन और व्रण में बंधन इस बात का हमें हमेशा ख्याल रखना चाहिए।

बाजार निर्मित वस्तु जो खाते।
बीमारी हो, मृत हो जाते॥[18]

वर्तमान में हम सुविधा भोगी हो गए हैं। घर में सभी प्रकार की सुविधाएँ उपलब्ध हैं जैसे गैस चूल्हा, मिक्सी, वाशिंग मशीन, टी.वी. आदि के बावजूद गृहणियों के पास समय की कमी होने लगी और घर में नाश्ता आदि न बनाकर बाजार से रेडीमेड खाना नाश्ता आने लगा। बाज़ार की बनी सामग्रियों में अमर्यादित खाद्य,

मिलावटी तेल घी, रसायनयुक्त मसाले और घटिया सामग्री मिलाकर बनते हैं जो हमारे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक और कभी कभी मौत का कारण बन जाता है, इससे बचना जरुरी है।

शुद्ध - भोज्य, कुछ दूरी जन में।
व्यर्थ व्याधि न, हो जीवन में॥[19]

शुद्ध भोजन यानी घर में निर्मित हो शुद्ध सामग्री का प्रयोग हो और मर्यादित हो पहले जरूर कष्टकारी होता है पर उससे हमें सामान्य के साथ गंभीर बीमारियों से बचे रहते हैं और हमारा जीवन स्वस्थ्य तंदुरुस्त रहता है जहाँ तक संभव हो बाजार की खाद्य सामग्रियों से दूरी ही बनाकर रखना चाहिए।

मात्रा-भोजन, मेहनत साथ।
स्वस्थ्य रहोगे, दिन वा रात॥[20]

भोजन मात्रानुसार सेवन करने योग्य है. आधा पेट खाना, एक चौथाई पानी और एक चौथाई खाली रखना जरुरी है। भोजन के पाचन के लिए सुपाच्य भोजन होना जरुरी है उसके साथ हमें मेहनत, व्यायाम और स्वयं के काम खुद करना चाहिए जिससे शरीर बलशाली और सुदृढ़ रहता है। हमें सुबह शाम अनुकूलतानुसार घूमना जरूर चाहिए।

वात, पित्त, कफ कुपित हो हार।
विवेक संतुलन, स्वास्थ सुधार॥[21]

हमारा शरीर पांच महाभूतात्मक है और उससे दोष, धातु और मलों का निर्माण होता है। दोषों की विषमता रोगों का कारण है और उनको साम्यावस्था में रखना या लाना चिकित्सा है। हमें अपने आहार विहार में ऐसी व्यवस्था रखनी चाहिए जिससे हमारे दोष कुपित न हो और हम स्वस्थ्य बने रहें।

फल धान्य दें शक्ति महान।
धार्मिक होते हैं परिणाम॥[22]

जितने अधिक हम सात्विक होंगे उतने अधिक हम सुखी और स्वस्थ्य होंगे, स्वस्थ्य और सुखी रहने से हम इस शरीर के माध्यम से हम धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिए हम शुद्ध और सात्विक फल अन्न का सेवन करें सो अति उत्तम फल वैसे आजकल रसायनयुक्त मिलते हैं इसीलिए हमें गुणवत्ता वाले और स्वस्थ्य और साफ़ सुथरे खाने के लिए लेना चाहिए।

चबा-चबा जो, अन्न हैं खाते।
कम खा, जीवन में मुस्कराते॥[23]

वर्तमान की आपाधापी में मनुष्य को जिसके लिए 24 घंटे कोल्हू के बैल के समान जुटा हुआ है वह अपने भोजन करने के लिए समय नहीं दे पा रहा है। हमें भोजन के उचित समय देना चाहिए, हमारा पाचन यांत्रिक नहीं है यह हमारे शरीर में पैदा होने वाले रसायनों से पचता है उसके लिए हमें भोजन चबा-चबा कर खाना चाहिए। जल्दी जल्दी खाने से अपचन की शिकायत होने के कारण अनेक बीमारियां होने लगती हैं और हमारा

जीवन कष्टमय होने लगता है। कम खायें पर चबा-चबा कर खायें।

प्रातः करते योग सभी।
उन्हें न आता रोग कभी॥[24]

यह कहावत चरितार्थ है रात्रि में जल्दी सोना, सुबह जल्दी उठना। इसका मतलब है हमें अपनी पूरी निद्रा यानी 6 से 7 घंटे की लेना चाहिए उसके बाद दैनिक कार्यों से निवृत्त होकर कुछ देर व्यायाम के साथ आत्मसाधना के लिए योग करना चाहिए। योग के माध्यम से हम तन और मन को स्थिर और स्वस्थ्य रख सकते हैं। हमारा तन, मन और इन्द्रियां स्वस्थ्य रहेंगी तो हमें रोगग्रस्त नहीं हो पाएंगे। इसलिए हमें आत्मावलोकन के साथ शारीरिक सुख के लिए कुछ समय निर्धारित कर योग जरूर करना चाहिए।

काली मिटटी-लेप पथ्य है।
शीतलता का सुकून तथ्य है॥[25]

स्वच्छता हमारे स्वास्थ्य के लिए अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए बहुत साधन और उपाय हैं। आजकल के जो सौंदर्य साधन हैं उनमें हानिकारक रसायन के साथ जानवरों की चर्बी का उपयोग होता है जो हमारे स्वास्थ्य और जीवन के अनुकूल नहीं है। इसके विपरीत हमारे लिए काली मिट्टी और बेसन साफ सफाई के लिए लाभकारी, सुलभ होने के साथ बिना मूल्य के उपलब्ध है। रासायनिक साधनों के उपयोग से अनेक प्रकार के त्वचा रोग होने की संभावना रहती है जबकि कालीमिट्टी हानिरहित और शीतलता प्रदान करती है।

त्रि-फल मिलकर त्रिफला होता।
रत्नत्रयः शिव-फल को जोता॥[26]

आयुर्वेद शास्त्र में त्रिफला को अमृत कहते हैं, यह परिपूर्ण रसायन है, इसकी महिमा अपार है यह हरड़ बहेड़ा आंवला का संयोग है। यह एक अनुपात एक अनुपात एक अनुपात लेकर शोधकर सुखाकर पीसकर एक बंद कांच की शीशी में रख कर खाओ, रात में पानी में डालकर सुबह आँखों को धो। यह सम्पूर्ण आहार है इसमें सभी जीवनीय द्रव्य हैं। जिस प्रकार जैन दर्शन में सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यग्चारित्र की महिमा है। इन तीन रत्नों के बिना सुखी नहीं रह सकते और ना मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं इसलिए त्रिफला को अमृत माना गया है।

त्रि-वस्तु-सह हलवा महके।
सुख होता, रत्नत्रय गहके॥[27]

जिस प्रकार हमारे निज घर में आटा, घी और मिश्री को सम्यक प्रकार से मिलाकर और पकाकर खाना जो हमारे मन को प्रसन्नता मिलती है जो पौष्टिक और हानिरहित भी होता है। इसी प्रकार यदि हम त्रि रत्न को भी सम्य प्रकार से ग्रहण कर हम मोक्षमार्गी बनकर सुखी बन सकते हैं और बनते ही हैं। त्रिरत्न ही सच्चा मोक्षमार्ग है जो अनुकरणीय है।

व्याधि हरे, अमृत - धारा।
सौख्य, जहाँ शिवपद धारा॥[28]

अमृतधारा कई चीजों के मिश्रण से बनती है। इसमें अजवायन का सत्त, पुदीना का सत्त, लौंग का तेल, कपूर, नीलगिरी का तेल जैसी चीजें डलती हैं। यह सब प्रकार के पाचन सम्बन्धी विकारों को दूर करता है और मनुज सुख प्राप्त करता है। इसी प्रकार जिसे मोक्षपद रुपी अमृत धारा मिलती है वह पूर्ण सुखी होकर निराकुल जीवन पाता है।

अहिंसक आहार, शाकाहार।
देश की भाषा, सौम्य-विचार॥[29]

हमारा देश अहिंसा प्रधान है और जितने भी तीर्थकर, श्रमण, साधु, संत, महंत ऋषि, मुनि, महापुरुष, और श्रावक सबको प्रिय हैं। अहिंसा और अहिंसा धर्म और व्रत का पालन शाकाहार से ही संभव है। जो आहार शांतिकारक और हानिरहित है वह शाकाहार है। आज पूरा विश्व शाकाहार अपनाने के लिए तैयार है। इसी प्रकार जो जन अपनी निज भाषा पर अभिमान करते हैं और उसे अपनाते हैं उनकी अभिव्यक्ति शीतलता देती है, वह स्वाभाविक भाषा होती है जिससे भाव अभिव्यक्ति सुगम होती है।

एक आहार व, दोय विहार।
योगि; वासना देते मार॥[30]

कहावत है जो मनुष्य एक बार आहार ग्रहण करता है वह योगी होता है, दो बार आहार लेने वाला भोगी होता है और तीन बार आहार करने वाला रोगी होता है। इसके साथ जो योगी दुगना विहार करते हैं यानी आहार ग्रहण के अनुपात में दुगना विहार करते हैं उनको काम वासना छू नहीं सकती।

जल-गालन, दिन भोजन भाय।
व्यसन त्याग, वह जैनी कहाय॥[31]

आचार्य श्री ने जैनी की पहचान बहुत सीधे सरल सपाट शब्दों में बता दी उनका कहना है कि जैनी व्यक्ति को सबसे पहले पानी छान कर पीना चाहिए। पानी छानना एक बहुत अहिंसात्मक प्रक्रिया है। जिस कुआं से जल निकाला जाता है उसको छानने के बाद छानने वाले वस्त्र जिसे छन्ना कहते हैं उसको धोकर बहुत सावधानी से उस बिलछानि को कुआं में डालना चाहिए जिससे जलकायिक जीवों की विराधना न हो। इसके साथ सूर्योदय के 3 से 4 पहर बाद जब जैन मुनि आहार ग्रहण करलें उसके बाद श्रावक को आहार लेना चाहिए। इसी प्रकार सूर्यास्त से 3 पहर पूर्व श्रावक को भोजन करना चाहिए। रात्रि भोजन में अनेकों सूक्षम जीवों की उत्पत्ति होने से जीव हिंसा का पाप लगता है इसी प्रकार बीड़ी सिगरेट, तम्बाखू, गांजा, अफीम, भांग, शराब आदि का सेवन वर्ज्य है। इस प्रकार छानकर पानी पीना, दिन में भोजन करना और सप्त व्यसन आदि का त्याग जो भी मनुष्य करता है वह जैनी कहलाने योग्य है।

आम-पना वह, तप-लू हरता।
मुनि तप समता - सह है सहता।[32]

जिस प्रकार कच्चा आम को आग में या पानी में डाल कर पका कर उससे आम का पना बनाते हैं उस

पना में कुछ नमक और कुछ मिठास मिलाते जहां उसके सेवन से गर्मी की ऋतु में यदि किसी को लू लपट लगती है तो वह उसे लाभदायक होता है। उसी प्रकार समता रूपी तप से मुनि महाराज तप कर ताप को सहते हैं उस ताप को सहने की शक्ति उन्हें समता रूपी तप से मिलती है। कच्चा आम खट्टा होकर खाने योग्य नहीं होता है उसी प्रकार तप से मुनि समता भाव प्राप्त करते हैं।

पड़े ठण्ड, गेंहू तब पकते।
परिषह सहें, कर्म हैं झड़ते॥[33]

जिस प्रकार गेंहू के बीज को खेती में फसल लेने उसका वपन करते हैं, फिर वह अंकुरित होकर, अनुकूल समय पाकर पक कर वह फसल बनती है। उस फसल से किसान लोकोपकार की भावना से उस अन्न को बाजार में बेचता है और स्वयं अगले वर्ष के लिए वह उसमें से कुछ अंश बचाकर बीज के रूप में रख लेता है। वपन से लेकर फसल आने और अपने निज घर में सुरक्षित रखने के समय में उसे अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितिओं से जूझना पड़ता है उसी प्रकार मुनि धर्म को पालन करने में 22 परीषहों को नग्नत्व, शीत, उष्ण, दंश, मशक, आदि सहन करते हैं जिससे वे अपने कर्मों की निर्जरा कर स्वकल्याण के साथ परकल्याण भी करते हैं।

गरिष्ठ भोज्य व ज्यादा हो।
ब्रह्मचर्य में-बाधा हो॥[34]

जितना सुपाच्य और हल्का भोजन है वह उतना ही सुगमता से पककर स्वास्थ्यवर्धक होता है, गरिष्ठ से तात्पर्य जो खाना घी, तेल से पकाकर बनता है वह विलम्ब से पचता है तथा वह शरीर और मन पर कुप्रभाव डालता है, जिससे शारीरिक और मानसिक विकार पैदा होते हैं। इससे हमारे चिंतन मनन में अंतर आता है। इस कारण हमारा ब्रह्मचर्य व्रत भी बाधित होता है और होने की संभावना बनी रहती है।

हवा; दवा का, काम करे।
तन में भी वह, शक्ति भरे॥[35]

वर्तमान में वायु, जल का प्रदूषण होने से हम अनेक बीमारियों से ग्रसित हो रहे हैं जैसे श्वास, कास, दमा, हृदय रोग, टी बी। शुद्ध हवा का मिलना विशेषकर शहरी और महानगरीय संस्कृति में दुष्कर हो रहा है। हमारी सृष्टि पंचमहाभूतात्मक है- पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश ये सामान्य हैं तो औषधि हैं और विकृति के कारण रोग का कारण हैं। जितनी अधिक वायु शुद्ध होगी हम उतने अधिक स्वस्थ्य रहेंगे। शुद्ध वायु तन मन को स्वस्थ्य और शक्तिवर्धक होती है। इसके लिए सुबह उठकर ताजी हवा का सेवन करना चाहिए।

कम खा, अधिक चबाते जो।
अपच-बीमारी न पाते वो॥[36]

स्वास्थ्य के प्रति सजग रहने वालों को आमाशय-स्थान की मात्रा से कम खाना चाहिए और जो भी भोजन में अन्न ग्रहण करें उसे बहुत अच्छे से चबा कर खाना चाहिए जिससे पाचक पित्त द्वारा ग्रहण किये हुए अन्न का पाचन होने से उस व्यक्ति को अपचन की शिकायत नहीं होती और वे स्वस्थ्य रहते हैं।

पर्वणि, ज्वर में लंघन जो।

स्वास्थ्य का नहीं उलंघन हो॥[37]

ज्वर कई प्रकार के होते हैं और सभी ज्वरों में यदि पहले कोष्ठ शुद्धि कर लंघन करते हैं वे शीघ्र स्वस्थ्य होने के साथ ज्वर के उपद्रवों से ग्रसित नहीं होते हैं। हमेशा लंघन वैसे भी सप्ताह में एक दिन जरूर करना चाहिए। जैन समाज में अष्टमी और चतुर्दशी का नियम प्रचलन में होने से स्वास्थ्य के लिए लाभकारी माना जाता है।

आमद कम, खरचा अपार।

एक अनार, सौ बीमार॥[38]

यह कहावत प्रचलन में है आमद कम खर्चा ज्यादा लक्षण है मिट जाने का। इसका आशय यह है जो व्यक्ति अपनी आमदनी के अनुरूप खरचा नहीं करता वह बहुत कष्टों में पड़ता है, उसके लिए। कर्ज लेना पड़ता है और न चुकाने की स्थिति में वह परेशान के साथ दुखी होकर कभी कभी आत्महत्या या परिवार जन की हत्या करते हैं। इसी प्रकार एक अनार एक ही व्यक्ति की पूर्ती करता है उसको पाने अधिक लोग होंगे तो वह किसी के लिए लाभप्रद नहीं होगा। आजकल बैंक के माध्यम से ऋण लेने का चलन होने के कारण अधिकांश कर्जे में डूबे हैं और परेशान हैं।

प्रातः टहलें, मिले हवा।

सौ रोगों की, एक दवा॥[39]

सुबह की हवा बहुत शुद्ध और ऑक्सीजन से भरपूर होने से हमें ताजगी, स्फूर्ति देती है, मन मस्तिष्क को शांति देने के कारण मनुष्य दिन भर चुस्त दुरुस्त बना रहता है और निरोग रहता है। निरोग रहना का मतलब दवा रहित जीवन। आजकल दवा का खर्चा हमारे खाने की सामग्री से अधिक है। इसके लिए सुबह जल्दी उठकर ताजी हवा में घूमना बहुत जरुरी और स्वास्थ्यवर्धक है।

अधिक शक्कर व, नमक जहाँ हो।

व्याधि-जनक ही, जहर वहां हो॥[40]

'अति सर्वत्र वर्जयते' शक्कर, नमक, मैदा और तेल ये चार प्रकार के जहर हमारे शरीर को रुग्ण करने के लिए काफी हैं। आजकल इनके सेवन से मधुमेह, हृदय रोग, पित्तजन्य रोग, लिवर सम्बन्धी आदि रोगों की प्रमुखता है। जहाँ तक संभव हो इनका सेवन सीमित और यथाशक्ति करना चाहिए। आजकल इनमें रसायनों का प्रयोग होने से घातक के साथ जानलेवा है। इनके विकल्प हमारे यहाँ मौजूद हैं शक्कर की जगह खांड, गुड़, नमक की जगह सेंधा नमक का सेवन करने से व्याधिरहित रहेंगे।

भूख से ज्यादा, कभी न खाना।

बिना परिश्रम, न सो जाना॥[41]

भूख हमारे पाचन की निशानी है। इसलिए भूख के समय हमें खाना खाना चाहिए। हमें भूख से अधिक

खाना नहीं खाना चाहिए। अधिक खाने से अपचन और अजीर्ण होने की संभावना बनी रहती है, इसके साथ हमें सोने के पूर्व जिस अनुपात में खाना खाया जाता है उस अनुरूप श्रम /परिश्रम /व्यायाम /घूमना चाहिए जिससे खाया हुआ भोजन सुपाच्य होने से लाभदायक होता है।

गेंहू उष्ण, कुछ भारी होता।
बलि तेजस्वी, तप को ढोता॥[42]

हमारा आहार /भोजन संतुलित होना चाहिए। संतुलित भोजन से शरीर को बल प्राप्त होता है और उससे हम बलवान बनकर तप साधना करते हैं। इसके लिए हमें गेंहू आदि बलवर्धक अन्न ग्रहण कर बलशाली बनकर तप साधना सुचारु ढंग से कर सकेंगे।

बड़ी शक्ति हो, चने चबाता।
ज्ञानी ज्ञान-समझ, निज -पाता॥[43]

संतुलित और पौष्टिक आहार जिसमें प्रोटीन की मात्रा भरपूर हो वह शक्तिवर्धक होता है। हमारे देश में जनसामान्य को प्रोटीन पाने का सस्ता और अनुकूल अन्न चना है जो शक्तिवर्धक होता है जिससे हमारा शरीर सुगठित होकर ज्ञानीजन ज्ञान प्राप्त करने योग्य शक्ति प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिए एक भाग चना और तीन भाग गेंहू मिलाकर रोटी खाने से वह सुपाच्य के साथ बलवर्धक होती है जिससे ज्ञानी जन अपनी ज्ञान प्राप्ति की शक्ति सरलता से प्राप्त कर लेते हैं।

गाय-दुग्ध, घृत, शीतल होता।
निर्मल दृष्टि, तप - शक्ति संजोता॥[44]

गौ घृत श्रेष्ठ होता हैं। गाय से पंचगव्य बनता हैं। जो बहुपयोगी होता हैं। गाय का दूध घी पाचक और शक्ति वर्धक होने के साथ शीतल और स्मृतिवर्धक होता है। वर्तमान में नकली घृत जो जहरीले रसायनों से बन रहा है जो जहर के साथ हानिकारक होता है। घी बहुत ही लाभकारी होता है यह शरीर के समस्त संधियों (जोड़ों) में स्निग्धता देता है, पाचक और तृप्तिदायक होता है, घी हमारे आहार को स्वादिष्ट बनाता हैं। इसी प्रकार गाय का दूध शीतलता दायक के साथ सम्पूर्ण भोजन है। इसमें हमारे लिए पूर्ण जीवनीय तत्व रहते हैं जो संतुलित और पौष्टिक आहार का काम करते हैं। इसके सेवन से नेत्र ज्योति बढ़ती हैं। और यह सात्विक होने से तपशक्ति में सहायक होता है। घी और दूध का नियमित सेवन आवश्यक है।

गाय दुग्ध, घृत, अमृत ऐसा।
शक्ति तेज दे, पाचन जैसा॥[45]

जीवनीय द्रव्य हमारे पाचन के साथ शारीरिक संगठन के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। गौघृत श्रेष्ठ होता है और इसी प्रकार गाय का दुग्ध पचनीय होता है। घी और दूध में आवश्यक जीवनीय द्रव्य होने से यह सम्पूर्ण भोजन है इसीलिए इसे अमृत संज्ञा दी गयी है। यह सम्पूर्ण शरीर के लिए सुपाच्य होने से सप्त धातुओं के निर्माण के साथ वीर्यवर्धक होने से लाभकारी है।

तक्र सुपाच्य, सुशीतल होवे।
ध्यानी सरल, सुशांति में खोवे॥[46]

दूध से हम दही जमा कर खाते है। जो सुपाच्य होता है पर यदि हम या ध्यानी जन दही की अपेक्षा तक्र का सेवन करते हैं वह लाभदायक होता है, तक्र हमारी जठराग्नि को दीप्त करता है, भूख बढ़ाता है और मन को प्रसन्न रखता है। इससे मन में भी शरीर के मन में भी शांति प्राप्त होती है। यह सुपाच्य होने के साथ पाचन में सहायक होता है। सुपाचन से हमारे मन में सरल परिणाम होने से ध्यानीजन इसे स्वीकारते भी हैं। इससे मनोनुकूलता होने से ध्यान में भी सहायक होता है।

उष्ण बाजरा, सुपाच्य भी हो।
प्रखर प्रवक्ता, उदार भी हो॥[47]

आजकल मोटा अनाज के खाने का चलन बढ़ रहा है। बाजरा रुक्ष, शीतल, लघु, मधुर, मल और वायु को बढ़ाने वाला होता है। यह शरीर में स्थिरता पैदा करता है। इस कारण सुपाच्य होता है। इसी प्रकार जो प्रखर वक्ता होना चाहता है उसे उदार वृत्ति भी रखना चाहिए।

मक्का सौम्य, सुपाचक होता।
वक्ता सुन्दर, वाचक होता॥[48]

मक्का रुक्ष, शीतल, लघु, मधुर, मल और वायु को बढ़ाने वाला होता है यह शरीर में स्थिरता पैदा करता हैं और यह शीघ्र पचता है। यह सुपाचक भी होता है। इसी प्रकार जो अच्छा वाचक होता है वह उतना सुन्दर वक्ता भी होता है। वाचना से ज्ञान वर्धन होता है इस कारण वक्ता भरे विश्वास और प्रखरता से वक्तव्य देता है।

तंदुल रजत-सा, शीतल माना।
तप-साधक, विधि सुपाच्य जाना॥[49]

धान्य यानी चांवल ये मधुर, अम्लविपाक, पित्तजनक और गुरु होते हैं ये चंडी जैसे धवल के साथ शीतलता प्रदान करने वाला होता है। इसी प्रकार जो तपसाधना में तल्लीन होना चाहते हैं उन्हें विधि सम्मत सुपाच्य आहार लेना चाहिए। जो जितना अधिक सुपाच्य होगा उतना तप साधना में सहायक होता है.

ज्वर आदिक में, मूंग है प्यारी,
धर्म साधना-में गुणकारी।[50]

मूंग कषाय में मधुर, रुक्ष, शीतवीर्य, विपाक में कटु, हल्का, विशद कफपित्तनाशक और दालों में सबसे उत्तम होती है। इसी प्रकार जो धर्म साधक होते हैं इस मूंग का सेवन उनके लिए हितकारी होता है।

होवे आंवला, सौम्य व शीतल।
शिव -साधकतम दृष्टि, निर्मल॥[51]

आंवला गुण में लघु, रुक्ष शीत, रस में पंचरस (लवण रहित)अम्लप्रधान, विपाक में मधुर और वीर्य में शीत के साथ इसमें सभी आवश्यक पौष्टिक जीवनीय द्रव्य होने से लाभकारी होता है। इसी प्रकार जो साधक

शिव पद को प्राप्त करना चाहता है उसे अपनी दृष्टि निर्मल और तीक्ष्ण रखना चाहिए जिससे वह अपने लक्ष्य को पा सकेगा।

यथा मुनक्का, पाच्य विरेचक।
तथा साधु -वच, हितैषी रोचक ॥[52]

मुनक्का अत्यंत गुणकारी द्रव्य और औषधि है। यह स्निग्ध, गुरु, मृदु गुण युक्त होती हैं इसमें मधुर रस होता है और मधुर विपाकि होने से वीर्य शीत होता है। इसमें भी सभी जीवनीय घटक होते हैं यह सुपाच्य और मल शोधन के लिए लाभप्रद होता है। इसी प्रकार जो साधु वचनों में शीतलता प्रदान करे, हितैषी हो और जो रोचकता प्रदान करे वही सद्गुरु होता है।

यथा हरिद्रा, व्याधि नाशक।
तथा स्वस्थ, समाधि उपासक ॥[53]

हरिद्रा यानी हल्दी बहुपयोगी द्रव्य और औषधि है। इसमें रुक्ष और लघु गुण होते हैं, यह तिक्त और कटु रस प्रधान होती है यह उष्ण के साथ कटु होने से अनेकों व्याधियों का नाशक है। यह बहगुणकारी है, इसके सेवन से हमारे शरीर में रोग प्रतिरोधक शक्ति भी आती है। इसके सेवन से मनुष्य स्वस्थ्य रहकर अपने अंतिम लक्ष समाधि को प्राप्त करता है और स्वस्थ्य रहने से वह समता भावी भी होता है।

मेंथी शूल वा, वादि नाशक।
दूर; व्याधि-भव, जिनेन्द्र उपासक ॥[54]

मेथी एक प्रकार की खाद्य सामग्री है यह बहुत लाभकारी होती है। ठण्ड के दिनों में इसकी भाजी मिलती है और इसके बीज हम वर्ष भर रखकर उपयोग करते हैं। यह शूल नाशक और वातनाशक होती है। आजकल इसका उपयोग सन्धिवात के साथ मधुमेह में किया जा रहा है। इसी प्रकार जिनेन्द्र देव की साधना प्रभावना चिंतन मनन करने से जन्म जन्मांतर के भाव रूपी व्याधि को नष्ट किया जा सकता है।

सेवफल सुपाच्य ठंडा माना।
उदर नरम तेजोदय जाना ॥[55]

फलों में सेवफल बहुत सुगमता से उपलब्ध होता है यह बहुत सुपाच्य और शीतकारक है। इसके सेवन से भोजन सुपाच्य होता है तथा यह वीर्यवर्धक होने से यह ओज को बढ़ाता है। यह सेवनीय फल है।

केला शक्ति-दायक फल है।
भारी सुदेर पाचक फल है॥[56]

यह केला सभी आवश्यक जीवनीय घटकों से युक्त है और यह बहुत शक्तिदायक के साथ पौष्टिक होता है। यह देर से पचता है और पाचक भी होता है। यह बहुत स्वादिष्ट और मनभावन होता है। यह कई बीमारियों में सेवनीय है। इसको मात्रानुकूल और स्वास्थ्य को ध्यान रखते हुए सेवन करना चाहिए। यह मधुर रस प्रधान होता है अतः मधुमेह रोगियों को सम्हल कर सेवन करना चाहिए।

अमरुद भूख व अग्नि बढ़ाये।
शीत ऋतु में शक्ति लाये॥[57]

अमरुद शीत ऋतु का फल है। यह जठराग्नि को प्रदीप्त करता है। यह भूख को बढ़ाता है इसके साथ यह बहुत अधिक पौष्टिक भी होता है। इसमें भी बहुत से जीवनीय घटक होते हैं। इसमें लौह तत्व की अधिकता होती है। यह रक्तवर्धक भी है।

रहा पपीता गर्म-सा फल है।
रहा विरेचक रोग का हल है॥[58]

पपीता लघु रुक्ष तीक्ष्ण गुणकारक है, कटु तिक्त रस से युक्त है वीर्य उष्ण और कटु विपाक होने से यह गर्म होने के साथ पाचक है, कब्ज को दूर भी करता है और पौष्टिक भी है। यह कई रोगों से मुक्त करता है।

लोकी, परवल लाभ बढ़ाये।
अमृत सदृश व्याधि हटाए॥[59]

जीर्ण ज्वर के बाद जब रोगी की भूख ख़तम होती हैं और गरिष्ठ भोजन अपथ्य होता है उस समय लौकी परवल की सब्जी सुपाच्य के साथ भूख बढ़ाने का काम करती है। ये शीघ्र पच जाते हैं और रोगी के लिए अमृत का काम कर व्याधि मुक्त करती है। इसका सेवन बहुत लाभदायक के साथ सात्विक होता है।

बादाम काजू गरिष्ठ होते।
पचा सके जो शक्ति जोते॥[60]

यह बात बहुत सत्य है बादाम काजू बहुत मंहगे और गरिष्ठ भी होते हैं। सामान्यजन भी अपनी पाचन अनुसार शक्ति अनुसार खाये। कारण ये प्रोटीन के स्त्रोत हैं। इसकी जगह मूंगफली और चना का भी सेवन लाभकारी होता है। ये भी शक्ति प्रदाता और पाचक होते हैं।

अखरोट सेहत को गुणकारी।
हृदय व जोड़ में बने सहाई॥[61]

अखरोट एक ऐसा मेवा है जिसमें गुरु स्निग्ध गुण होता है, इसका रस, विपाक मधुर है और वीर्य उष्ण है। इसकी मज्जा दीपन, स्नेहन, पित्तसारक तथा अनुलोमन है। इसके सेवन करने से हमारा हृदय और शरीर के जोड़ों में बहुत लाभदायक है। इसका सेवन करने से मन मष्तिष्क को भी लाभ पहुंचता है। यह मेधा रसायन भी है।

जीरा ठंडा, वायुकारक।
सेवे होता, ज्योति धारक॥[62]

हमारे घरों में नित्य प्रति जीरा का उपयोग खान पान में होता है, पर हम इसके गुणों से अनिभिज्ञ हैं। जीरा लघु, रुक्ष गुणों से भरपूर है, रस, विपाक में कटु वीर्य उष्ण होता है। इसका प्रयोग करने से हमारा पाचन ठीक रहता है। इसके साथ यह वायुनिसारक है। यह नेत्र की ज्योति को बढ़ाता है। इसका सेवन नित्य हमारे भोजन में होने से यह पौष्टिक भी है।

सौंफ, धना ठण्ड हैं भरते।
सुपाच्य सुगन्धि, मन भी हरते॥[63]

हमारे यहाँ अनेक ऐसे द्रव्य हैं जो औषधि का भी काम करते हैं। सौंफ लघु तीक्ष्ण स्निग्ध गुणकारी होने के साथ रस और विपाक में मधुर, कटु, तिक्त के साथ वीर्य में किंचित उष्ण है पर यह कफ का शामक होने से यह ज्वर और दाह में ठंडक देता है। इसी प्रकार धना भी गुणों का भण्डार है यह लघु स्निग्ध के साथ रस और विपाक में कषाय, तिक्त, मधुर कटु होने से उष्ण वीर्य हैं पर यह ज्वर और दाह प्रशमन हैं। यह भूख को बढ़ाता है। इनकी सुगन्धि मन को प्रफुल्लित करती है। इसका नित्य सेवन जरुरी है।

अडूसा खांसी को हरता हैं।
खजूर गर्म, शक्ति भरता हैं॥[64]

अडूसा लघु, रुक्ष तथा तिक्त कषाय होने से कफ–पित्त का शमन करता है। इसकी पत्तियों का लेप शोथहर, वेदनास्थापन करता है। यह मुख्य रूप से कांस रोग में अत्यंत लाभकारी है। इसी प्रकार खजूर भी शीत ऋतु में सेवनीय होने के कारण शक्तिवर्धक कार्य करता है। खजूर यह मेवा के साथ बहुत रक्तवर्धक औषधि के रूप में सेवनीय है।

सौंठ सर्दी को हर लेती।
मुलेठी कंठ स्वच्छ कर देती॥[65]

हर घर में सौंठ होना ही चाहिए, कारण यह बहुगुणकारी होती है यह लघु स्निग्ध, कटु रस युक्त और उष्ण वीर्य होने से यह कफवातशामक है। यह शीतप्रशमन, शोथहर और वेदनास्थापन का कार्य करती है। इसी प्रकार मुलेठी मधुर रस और मधुर विपाकि होने से हमारे शरीर के पित्त को हरता है। यह स्निग्ध और मधुर होने से कफनिःसारक और कण्ठ्य है। यह गले के रोग में भी लाभकारी होती है।

आजवाइन पाचक होती है,
लोंग गर्म, मुख शुद्धि करती है।[66]

अजवाइन बहुत छोटी पर अत्यंत गुणकारी होती है। इसमें लघु, रुक्ष, तीक्ष्ण गुण होने से यह पित्तवर्धक और कफवातशामक होती है। यह अरुचि, अग्निमांध, अजीर्ण उदरशूल आदि रोगों में भी लाभकारी होती है। इसी प्रकार लोंग लघु तीक्ष्ण स्निग्ध गुणकारी होने से कफ और शीत का शमन करती है इसे मुख और कंठ रोगों में चूसते हैं और यह मुख शुद्धि करती है।

इलायची ठंडी है होती।
मुख शुद्धि सह खुसबू भरती है॥[67]

इलायची लघु, रुक्ष और मधुर रस के साथ शीत वीर्य होने से यह त्रिदोषहर है। यह मुखशोधन, दुर्गन्धनाशन, रोचक दीपन, पाचन और अनुलोमन से युक्त होती है। यह औषधि के साथ नित्य दैनिक उपयोग में भी लाभकारी है।

काली मिर्च पाचक होती।
कंठ साफ कर राहत देती॥[68]

काली मिर्च गुणों में लघु और तीक्ष्ण और उष्ण होने से यह वात और पित्त का शमन करती है अल्प मात्रा में यह पौष्टिक का कार्य करती है। यह अग्निमांध, अजीर्ण, पेट में अफारा को ठीक करती है। यह श्वाश कांस, सर्दी, जुखाम के साथ गले के रोगों में लाभकारी होती है।

गिलोय रोग प्रतिरोधक है।
शक्ति भरे तन पोषक है॥[69]

गिलोय अद्भुत औषधि है इसमें गुरु स्निग्ध गुण है तथा यह तिक्त कषाय रस से युक्त होने से मधुर रस विपाकी होने के साथ उष्ण वीर्य है। यह ज्वर के लिए अत्यंत लाभकारी के साथ यह रोग प्रतिरोधक शक्ति से भरपूर है। यह दीपन, पाचन के साथ आमाशयगत अम्लता कम करती है। यह पौष्टिकता से भरपूर है। इसे हर समय लेने से शरीर तन्दुरुत रहता है।

तुलसी ज्वर को हर लेती।
तन को स्वस्थ्य भी कर देती॥[70]

तुलसी बहुत ही उपयोगी एवं लाभकारी औषधि है। इसका धार्मिक उपयोग भी होता है। इसमें लघु, रुक्ष गुण होते हैं इसके साथ यह कटु और तिक्त होती है, उष्ण वीर्य होने से यह ज्वरनाशक है यह कफवातशामक और पित्तवर्धक होने के साथ वातहर और शोथ यानी सूजन को नष्ट करती है। इस प्रकार यह हमारे शरीर और मन हो स्वस्थ्य करती है।

पिपली कफ हारक होती।
खांसी में राहत देती॥[71]

पिपली लघु, स्निग्ध, तीक्ष्ण गुण वाली और कटु रस की होती है यह कटु होने से कफ और स्निग्ध होने से वात का शमन करती है इस कारण यह कफ में लाभकारी होती है। यह कफवातशामक होने से कास को हरने वाली श्वाश और हिच्की को नाश करने वाली होती है और राहत देती है।

नीम पित्त को है हरती।
ब्राह्मी दिमाग ठंडा रखती॥[72]

नीम हमारे देश में बहुतायत से मिलने वाला वृक्ष है। नीम अत्यंत गुणकारी पेड़ होता है। नीम लघु रस में तिक्त, कषाय कटु और वीर्य में शीत होने से यह पित्त का शमन करती है। इसका प्रयोग दाह को शांत करने के साथ यकृत को उत्तेजित कर अरुचि को दूर करता है। इसी प्रकार ब्राह्मी हमारे यहाँ बहुत प्राचीन औषधि है यह मेधा रसायन और तंत्रिकातंत्र को बलशाली बनाती है। इसको खाने से दिमाग शांत रहता है और दिमाग को पौष्टिक बनाता है। इसका सेवन करना चाहिए।

गोंद पचाये, कोई जिसे-।
-शक्ति देती बहुत उसे॥[73]
उदर स्वच्छ भी गोंद करे।
तन तेजस में काम करे॥[74]

गोंद पेड़ पौधों से प्राप्त होने वाला एक प्राकृतिक पदार्थ है यह पौष्टिक के साथ सुपाच्य होता है इसके सेवन से कब्ज संबधी बीमारी दूर होकर पाचन सुधारती है। पाचन सुधरने से भूख बढ़ती है और रक्त का निर्माण होने से शरीर में ओज प्राप्त होता है। यह प्रसूता स्त्री को लड्डू के रूप में दिया जाता है।

चन्दन जलन को दूर करे।
बबूल दंत में शक्ति भरे॥[75]

चन्दन का पेड़ खुशबूदार होता है। यह पित्तशामक होने से जलन/ पीताधिक्यता को कम करता है। यह बहुत लाभदायक होता है। यह ज्वरशामक भी है। इसी प्रकार बबूल गुरु रुक्ष गुण युक्त होने से और शीत वीर्य होने के कारण मुख, दन्त और कंठ रोगों में इसकी छाल लाभदायक होती है। इसकी नित्य दातुन करना चाहिए।

चिरायता गुरबेल कषाय।
सेवे कुछ दिन ज्वर भी जाय॥[76]

चिरायता लघु रुक्ष गुण होता है इसका रस तिक्त विपाक कटु और वीर्य शीत होने के कारण यह ज्वरघ्न होता है। यह पाचक भी होता है। इसके साथ ज्वर के बाद होने वाली कमजोरी को भी दूर करता है। गुरबेल अद्भुत औषधि है इसमें गुरु स्निग्ध गुण है तथा यह तिक्त कषाय रस से युक्त होने से मधुर रस विपाकी होने के साथ उष्ण वीर्य है। यह ज्वर के लिए अत्यंत लाभकारी के साथ यह रोग प्रतिरोधक शक्ति से भरपूर है। यह दीपन, पाचन के साथ आमाशयगत अम्लता कम करती है। यह पौष्टिकता से भरपूर है। इसे हर समय लेने से शरीर तन्दुरुत रहता है।

नारियल तैल सेवा में हो।
तन शीतलता - सह वह हो॥[77]

नारियल तेल में गुरु स्निग्ध गुण होता है यह शीत वीर्य के साथ केशवर्धक है। यह मधुर शीत होने से पित्त का शमन करता है। इसका तेल क्षय रोग में प्रयुक्त करते हैं इसका सेवन भी शरीर में बल देता है और भोज्य भी है। यह शरीर को बल प्रदान करता है।

सरसों तैल शीत हरता।
जल-सह हो ठंडा करता॥[78]

सरसों का तेल शरीर के लिए बहुत फायदेमंद होता है इसमें सभी प्रकार के जीवनीय पोषक तत्व होते हैं। इसको शरीर की मालिश के लिए उपयोग करने से शरीर में प्रतिरोधक शक्ति बढ़ती है और शरीर शीत आदि सहन करने योग्य हो जाता है। यह गर्म भी होता है। इसका उपयोग भोजन बनाने में भी होता है।

एरंड देता जलन हटा।
घाव भरे वह पथरचटा॥[79]

यह भी वनस्पति का तेल होता है यह पित्तशामक होता है जिससे शरीर में होने वाली पित्त को शांत कर देता है। इसको कब्ज दूर करने में उपयोग किया जाता है। इसी प्रकार पथरचटा में लघु रुक्ष गुण होने से शीत वीर्य होता है। यह वातपित्तशामक है। यह रक्तस्कंदन है। यह सूक्ष्म धमनियों का संकोच कर रक्तस्राव बंद करता है। यह व्रणरोपण और शोधन में लाभकारी है।

दवा प्रयोग में, वैद्य हाथ हो।
रोग मिटे, जब पुण्य साथ हो॥[80]

चिकित्सा चार पादों /स्तम्भों पर आधारित है। चिकित्सक, औषधि, परिचारक और रोगी; इनमें भी चार-चार गुण होते हैं। जिस प्रकार चन्द्रमा में सोलह कलाएं होती हैं तभी वह परिपूर्ण होता है उसी प्रकार चिकित्सा भी 16 कलाओं से युक्त होने पर परिपूर्ण होती है। दवा एक माध्यम है पर व्यक्ति /रोगी /जीव अपने पुण्य से ठीक होता है। जब दवा काम नहीं करती तब दुआ काम करती है।

चिकित्सा शास्त्र बहुत विस्तृत शास्त्र है। आयुर्वेद शास्त्र न केवल चिकित्सा शास्त्र है वह जीवन जीने की कला सिखाता है कि आप किस प्रकार स्वस्थ्य रहकर अपने जीवन को सुखद बनाकर चार पुरुषार्थ प्राप्त कर सकते हैं कुशल चिकित्सक भगवान का रूप होता है।

मेरे द्वारा गुरु आदेश से समयावधि में इस पुनीत कार्य को करने का प्रयास किया। प्रत्येक सूत्र की विवेचना बहुत विशद है। मैंने संक्षिप्त में भावार्थ करने का प्रयास किया यह कितना सार्थक है इस बात की पुष्टि गुरु की अपेक्षा में खरा उतरा तभी कहना संभव होगा। ऐसी ही अनुकम्पा गुरु श्री आचार्य आर्जवसागर जी महाराज की बनी रहे यही भावना रखता हूँ।

विद्यावाचस्पति डॉक्टर अरविन्द प्रेमचंद जैन
संरक्षक शाकाहार परिषद्, 2 /104 पेसिफिक ब्लू, नियर डी-मार्ट, होशंगाबाद रोड, भोपाल 462026
मोबाइल 09425006753

(27 अप्रैल 2023)

संदर्भ ग्रंथ-

- चरक सूत्र स्थान
- सदाचार सूक्ति काव्य

भाव विज्ञान परिवार के नवागत सदस्य

इंदौर- श्रीमती शशि जिनेन्द्र जैन, श्रीमती अंतिम सुनील कासलीवाल, श्रीमती नीना संदीप जैन, श्री जिनेश कुमार रजतकुमार जैन, श्री डी.के. जैन, श्री दिनेश तरुणबाला जैन, श्री जैन नरेन्द्र सुभाषिणी सेठ, श्री श्रेयांस जैन, श्रीमती जैन रेखा अशोक कासलीवाल, श्रीमती मुक्ति ऋषि पंचरतन जैन, श्री जैन मुकेश पापरीवाल, श्री सौरभ सिंघई, श्रीमती रश्मि धर्मेन्द्र कुमार जैन, श्रीमती प्रभादेवी जैन, श्रीमती साधना सुधीर जैन, श्री अरविंद सुरेशचंद जैन।

आचार्य श्री आर्जवसागर जी के काव्य सौन्दर्य में धर्म प्रभावना के गुण

-पं.लालचन्द्र जैन 'राकेश', भोपाल

एक अच्छे लेखक, सुष्ठु वक्ता, और सरस हृदय सुकवि के रूप में आचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज के द्वारा सर्वान्तः सुखाय की भावनाओं से ओत-प्रोत होकर पद्यमय काव्य संग्रह 'तीर्थोदय काव्य' की रचना की है जिसमें जैन धर्म के चारों अनुयोगों का सार समाहित है। प्रस्तुत लेख में जैन दर्शन के अनूठे ग्रन्थ - ''तीर्थोदय काव्य'' के रचयिता आचार्यश्री आर्जवसागर जी महाराज के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए काव्य की विशेषताओं का वर्णन किया गया है।

-संपादकीय

पूर्व पीठिका-

संत शिरोमणि महाकवि काजलजयी साहित्य सृष्टा, तपोनिष्ठ परमपूज्य 108 आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज वर्तमान के वर्द्धमान के रूप में कोटि-कोटि जनता के मन मंदिर में विराजमान हैं। पूज्य श्री का विशाल शिष्योद्यान है, जिसमें रत्नत्रय एवं उत्तमक्षमादि दस धर्मों की सुरभि सुरभित, तीन सौ से भी अधिक शिष्य है जो बाल ब्रह्मचारी, विद्वान एवं धर्म की ध्वजा को आगे बढ़ाने वाले हैं। परमपूज्य 108 आचार्यश्री आर्जवसागर जी महाराज भी उनमें से एक हैं।

आपने जीवन के अरुणोदय से ही संसार-शरीर-और भोगों से विरक्त हो साधना के सोपानों पर क्रमशः आरोहण कर आचार्य तक की मंगल यात्रा पूर्ण की है। आपकी गणना आचार्य श्री विद्यासागर जी के परम प्रभावक शिष्यों में की जाती है।

आचार्य श्री आर्जवसागर जी का बाह्य व्यक्तित्व-

संगमरमर की तराशी मूर्ति जैसी सुन्दर-सुडौल-सुगठित, तपस्तेज की प्रभा से आलोकित देहयष्टि, उन्नत भालपट्ट, आँखों से झाँकती करुणा, वात्सल्य को प्रवाहित करती हुई वचनावलि, भेदविज्ञान एवं वीतरागता को प्रकट करती नासाग्र दृष्टि, प्राणिमात्र के प्रति अहिंसा एवं मैत्री को आमंत्रण देते अधर, चन्द्रोज्जवल पीयूष वर्षी मुखमंडल पर खेलती, अन्तस् के आनन्द को छलकाती सरलता- इन सबकी समष्टि से निर्मित व्यक्तित्व का नाम है- आचार्य श्री आर्जवसागर। आचार्य श्री का काव्य जितना सुन्दर है आपका व्यक्तित्व भी उतना ही अधिक प्रभावक है जो वैराग्य और वीतरागता की धर्म प्रभावना कर रहा है।

आन्तरिक व्यक्तित्व-

आचार्य श्री आर्जवसागर जी का आन्तरिक व्यक्तित्व यथा नाम तथा गुण की उक्ति को शत प्रतिशत चरितार्थ करता है।''मुनिमन सम उज्ज्वल नीर'' की पंक्तियों के आप प्रतिनिधि हैं। आपके नयनों में अन्तस् की सरलता और निर्मलता स्पष्ट झलकती है। आप के द्वारा रचित साहित्य इसका साक्षी है। आचार्य श्री का साहित्य

संसार-शरीर और भोगों से विरक्ति उत्पादक धार्मिकता से ओत-प्रोत, विषय-कषायों का विरेचन कराने वाला, सम्यक्-चारित्र की प्रेरणा देने वाला, भवाताप हर संजीवनी बूटी के समान परमोपकारी है।

आचार्य श्री के व्यवहार में विनम्रता और उदारता, भावों में समता और समरसता, अभिव्यक्ति में स्पष्टता, हृदय में गंभीरता, विचारों में शुचिता और श्रेष्ठता, आचरण में अकम्प दृढ़ता, ज्ञानोपयोग में अविरल निरन्तरता एवं चिन्तन में सूक्ष्मता के दर्शन होते हैं। झुकी पलकों में करुणा, अहिंसा, संवेदनशीलता, परदुःखकातरता, संयम, साधना एवं वीतरागता का संदेश है। इस प्रकार आचार्य श्री अपने काव्य से एवं अपने व्यक्तित्व से धर्म की प्रभावना कर रहे हैं।

तीर्थोदय का काव्य सौन्दर्य-

आध्यात्मिक संत परमपूज्य आचार्य श्री 108 आर्जवसागर जी महाराज अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी साधु हैं, जो वैराग्य की वृद्धि करने, संयम की साधना को निर्दोष बनाने, समय का सदुपयोग करने एवं आगमानुकूल चर्या बनाये रखने के लिए सतत् स्वाध्याय में लीन रहते हैं। आपने आगम का मात्र स्वाध्याय ही नहीं किया अपितु जैसे सूर्य समुद्र के खारे जल को अपनी ऊर्जा से पीकर और उसे सरस-मिष्ट बनाकर वर्षा के रूप में जगजीवों के कल्याण के लिये वापस कर देता है वैसे ही आचार्य श्री आगम को आत्मसात् कर उसे कठिन से सरल और सरस बनाकर गद्य-पद्य मयी रचनाओं के माध्यम से समाज के कल्याणार्थ धर्म प्रभावना के रूप में हमें सौंप देते हैं।

संत शृंखला के अनमोल मणि, चतुर्थकालीन श्रमणचर्या के पालक, तत्त्वचिंतक, अध्यात्मरसिक परमपूज्य आचार्य श्री आर्जवसागर जी द्वारा रचित साहित्य गुणवत्ता एवं संख्या की दृष्टि से विशाल है। प्रत्येक कृति छोटी हो या बड़ी जैन धर्म के सिद्धान्तों की अनुपम मंजूषा है। तीर्थोदय काव्य भी उनमें से एक है, जो आज मानव को प्रकाश स्तम्भ के समान सन्मार्ग दर्शक एवं धर्म प्रभावना के गुणों से संयुक्त है। इसका प्रतिदिन पारायण-सह आचरण करना चाहिए।

परमपूज्य आचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज मूलतः कवि हैं। यह गुण आपको गृहस्थ जीवन के पिता श्री शिखरचन्द जी से पैतृक विरासत के रूप में प्राप्त हुआ है जो स्वयं अच्छे कवि थे। उनकी कविताएँ ''मुक्ति-पथ के गीत'' संकलन में प्रकाशित हैं। ये गीत वैराग्य की चासनी में पगे हैँ एवं पवित्र हृदय की गहराई से निकले हैं। प.पूज्यश्री के ''तीर्थोदय काव्य'' की समता हम उस मान-सरोवर के कर सकते हैं जिसमें सोलह कारण भावनाओं के धवल राजहंस विहार कर रहे हैं, सच्चे देव-शास्त्र-गुरु रूपी नाविक सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरित्र की नौका लिये भव्यों को सांसारिक दुःखावर्तों से मुक्ति दिलाने के लिये पुनः-पुनः आमंत्रण दे रहे हैं। कल्याण के इच्छुक व्यक्तियों को इस काव्य को अपना कण्ठाभरण बनाकर आचरण में उतारना चाहिए।

''तीर्थोदय''का भावपक्ष-

काव्य के सौन्दर्य में भावपक्ष का विशेष महत्व है। इसमें रस-रीति-गुण एवं शक्तियों का समावेश

होता है।''तीर्थोदय काव्य'' में शान्त, करुण, वात्सल्य रसों की प्रधानता है तथा यथास्थान वीर, वीभत्स एवं अद्‌भुत आदि रसों का भी सुन्दर परिपाक हुआ है। साहित्य हृदय के विचारों का दर्पण होता है। आचार्यश्री की प्रकृति अत्यंत सरल और विचार पवित्र हैं। साहित्य में काव्यगुणों के माध्यम से इनका प्रतिबिम्ब है। आप काव्य; प्रसाद एवं माधुर्य गुणों से परिपूरित है। शब्दशक्तियों एवं रीतियों का प्रयोग भी यथा स्थान किया गया है। सारांश यह कि ''तीर्थोदय काव्य'' का भावपक्ष अत्यंत समृद्ध है।

''तीर्थोदय काव्य'' का कला पक्ष-

कला-पक्ष के अंतर्गत भाषा, अलंकार, कहावतें, मुहावरे, छन्द एवं शैली पर विचार किया जाता है। ''तीर्थोदय काव्य'' की भाषा शुद्ध खड़ी बोली है। भाषा में सरलता, सहजता, प्रवाह एवं प्रभाव है। उसमें मिश्री की मधुरता एवं कल-कल करती सरिता का सौन्दर्य है। आपका शब्द कोष अत्यन्त समृद्ध होने से भावाभिव्यक्ति में स्फटिक की तरह स्पष्टता है। पूज्य श्री ने संयमी जीवन के 35 वर्षों में भारत के विविध प्रान्तों में भ्रमण कर धर्म प्रभावना की है, वहाँ की भाषायें सीखीं हैं। अतः विविध भाषाओं के शब्द भी मणिकांचन योग की तरह भाषा की शोभा बढ़ा रहे हैं। कहावतों, मुहावरों एवं विविध अलंकारों का यथास्थान, प्रयोग हुआ है। पूरा ''तीर्थोदय काव्य'' ज्ञानोदय तथा दोहा छंद में निबद्ध है जिसमें गेयता का गुण पुनः-पुनः पारायण द्वारा कूट-कूट कर भरा है। भावाभिव्यक्ति एवं धर्मप्रभावना के लिये ''तीर्थोदय काव्य'' में विवरणात्मक, वर्णनात्मक, उपदेशात्मक, सूक्ति, समास, व्यास, प्रतीक, छन्द, अलंकार एवं प्रश्नोत्तर दृष्टान्त आदि शैलियों का प्रयोग किया गया है। मौलिकता एवं अद्यतन विषयों के समावेश ने काव्य को प्रभावक बना दिया है। सभी दृष्टियों से ''तीर्थोदय काव्य'' एक उत्तम काव्य है जो सभी के द्वारा पठनीय, आदरणीय एवं आचरणीय है।

काव्य सौन्दर्य में धर्म प्रभावना के गुण-

''तीर्थोदय काव्य'' के काव्य सौन्दर्य की चर्चा पहले की जा चुकी है, अब प्रश्न यह है कि वह काव्य सौन्दर्य धर्म प्रभावना में कहाँ तक और कितना सहायक है? सबसे पहले हम धर्म और प्रभावना का अर्थ समझते हैं।

धर्म-

''रत्नकरण्डक श्रावकाचार'' नामक ग्रंथ में आचार्य श्री समन्तभद्र ने धर्म की परिभाषा (निरुक्ति अर्थ) देते हुए कहा है- ''संसार दुःखतः सत्वान् योधरत्युत्तमे सुखे'' अर्थात् जो जीवों को संसार के दुःखों से निकालकर स्वर्ग मोक्षादिक के उत्तम सुख में पहुँचाता है, वह धर्म है। इसी श्लोक के प्रथमांश में धर्म की तीन विशेषतायें बताई गई हैं, समीचीनता (श्रेष्ठता)-कर्म विनाश और दुःख से मुक्ति एवं मोक्ष सुख की प्राप्ति। ये तीनों गुण ''तीर्थोदय काव्य'' में कूट-कूट कर भरे हैं।

प्रभावना-

अज्ञान-तिमिर-व्याप्तिमपाकृत्य यथायथम्।

जिनशासन-माहात्म्य-प्रकाशः स्यात्प्रभावना॥ 18॥[1] रत्न.श्रा.

अर्थात् अज्ञान रूपी अंधकार के विस्तार को दूर कर अपनी शक्ति के अनुसार जिन शासन के माहात्म्य को प्रकट करना प्रभावना है। संक्षेप में जिनेन्द्र भगवान के द्वारा बताये गये आत्महित के सच्चे उपाय और जिनागम (धर्म, शास्त्र, उपदेश) को बताना धर्म प्रभावना है।

प्रभावना के दो प्रकार हैं- व्यवहार प्रभावना और निश्चय प्रभावना। श्रावकों के द्वारा दान-पूजा आदि से और मुनियों के द्वारा श्रुत-तप आदि से जैन शासन का महत्व प्रकट करना व्यवहार प्रभावना है तथा सम्यग्दर्शन ज्ञान एवं चारित्र रूप रत्नत्रय के प्रभाव से आत्मा को प्रकाशमान करना निश्चय प्रभावना है। अन्य शब्दों में कहें तो-

आत्मा प्रभावनीयो रत्नत्रय तेजसा सततमेव।
ज्ञान-तपो-जिन पूजा, विद्यातिशयैश्च जिन धर्मः॥

हम, अब आचार्य श्री के काव्य-सौन्दर्य में धर्म प्रभावना के गुणों पर दृष्टिपात करते हैं। पूज्य श्री ने ज्ञान-श्रुत-तप-आदि के द्वारा धर्म प्रभावना की है।

1.''**ग्रंथ-प्रतिज्ञा**'- ग्रंथारम्भ में आचार्य श्री ने की है। वे लिखते हैं-

सोलहकारण तीर्थ-भावना, भाऊँ कर्म नशाने को।
यह ''तीर्थोदय' काव्य लिखूं मैं, भव-सुख-तज, शिव पाने को॥ 1॥[2]

इसमें धर्मप्रभावना का यह संदेश निहित है कि ग्रंथ लेखन का उद्देश्य शुभ होना चाहिए- कर्म नष्ट कर शिव प्राप्त करना, अर्थात् ''आत्म हितं कर्तव्यम्'' के साथ परहित भी करना चाहिए।

2.मंगलाचरण-

ग्रंथ रचना में विघ्न न आने के उद्देश्य से मंगलाचरण किया जाता है, उस परंपरा का निर्वाह पूज्यश्री ने आराध्यों के स्मरण द्वारा धर्मप्रभावना की है कि ग्रंथारम्भ में मंगलाचरण अवश्य करना चाहिए।

3. गुरुओं के प्रति आदर भाव-

मंगलाचरण शीर्षक में भद्रबाहु स्वामी, विशाखाचार्य, कुन्दकुन्द, आचार्य समन्तभद्र, आचार्य ज्ञानसागर का मंगल स्मरण किया है। आचार्य श्री विद्यासागर जी को नमन करते हुये आप लिखते हैं-

शिष्य शताधिक बने आपके, मैं भी हूँ इक उनमें से।
बहत किये उपकार आपने, यह कृति भी इक उनमें से॥
काव्य-कुशलता, अनेकान्तमय, जिनशास्त्रों के ज्ञाता हैं।
ऐसे विद्यासागर गुरु को, नमते गा गुणगाथा हैं॥ 11॥[3]

इसके द्वारा आचार्य श्री ने गुरुओं को सम्मान देकर धर्मप्रभावना की है।

4. ज्ञान द्वारा धर्मप्रभावना-

ज्ञान, धर्मप्रभावना का सर्वोत्तम साधन है। जैसे देहरी पर रखा दीपक बाहर और भीतर रखे पदार्थों को

प्रकाशित करता है उसी प्रकार ज्ञान भी स्व-पर प्रकाशक होता है। ज्ञानी व्यक्ति अपने कल्याण के साथ अन्य का कल्याण भी कर सकता है। आचार्य श्री ने अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग द्वारा आत्म-प्रभावना तो की ही, साथ में ''तीर्थोदय काव्य'' जैसे सुन्दर काव्य लिखकर धर्म प्रभावना की है। व्यक्ति इसका स्वाध्याय करके अपने अज्ञानतिमिर को हटा सकता है।

5. ''तीर्थोदय काव्य'' ज्ञान का कोश-

काव्य सौन्दर्य की दृष्टि तो ''तीर्थोदय काव्य'' सर्वांग सुन्दर है ही, उसके साथ वह ज्ञान का कोष भी है। वह हिन्दी का तत्त्वार्थ सूत्र है, हिन्दी का रत्नकरण्डकश्रावकाचार है, मूलाचार है, इसे अध्यात्म ग्रन्थों का संक्षिप्त रूप समझना चाहिए। इसमें लोक कल्याण की भावना है। यह आचार्य श्री के ज्ञान-वैराग्य-साधना का अमृत कलश है। बहुत क्या कहें? यह आल इन वन का काव्य है किन्तु उसके समर्थन के लिये अन्यानेक प्रासांगिक विषयों का समावेश उसमें किया गया है, जैसे सम्यग्दर्शन, अणुव्रत, तीन गुणव्रत, शिक्षाव्रत, सामायिक, दान, प्रतिमाएं, सप्त व्यसन, रात्रिभोजन त्याग, अभक्ष्य त्याग, जल गालन विधि, श्रावक के प्रकार, परिषह, पंचकल्याणक, समवशरण, दस धर्म, अनुयोग, नय, मार्गणा-गुणस्थान, समाधि इत्यादि अनेक विषयों का एक जगह वर्णन है। भाषा सरल है, कविता स्वयं रमणीय होती है। आचार्य श्री ने और भी रमणीय बना दी है। अतः भाव आसानी से समझ में आ जाते हैं। इस प्रकार ''तीर्थोदय काव्य'' की सुन्दरता में धर्म प्रभावना का गुण विशेषता से प्राप्त है। इसका प्रतिदिन स्वाध्याय कर आचरण में उतारना चाहिए।

6. तप का फल ''तीर्थोदय काव्य''-

आचार्य श्री ने 12 वर्ष की दक्षिण यात्रा के प्रवास में तमिल प्रान्त के कन्नलम ग्राम में सम्पन्न चातुर्मास सन् 1997 में षोडसकारण पर्व में 32 दिन एक आहार एक उपवास की विशुद्धि पर्वूक ''तीर्थोदय काव्य'' की रचना प्रारम्भ की यही क्रम आगामी वर्ष में षोडसकारण पर्व में चलता रहा तथा चार मास एवं एक वर्ष में इस काव्य की पूर्णता हुई, यह संकेत हमें प्रशस्ति पृष्ठ 155 से प्राप्त होता है यह काव्य बेजोड़ है तथा उपवास कृत पुण्य का फल है-

चार मास इक वर्ष में, पर्व काल का योग।
उपवासों के पुण्य से, बना काव्य संयोग॥ 694॥[4]
सप्त शतक चौ पद्य हैं , काव्य बना बेजोड़॥ 695॥[5]

इसीलिये ''तीर्थोदय काव्य'' सौन्दर्य युक्त रचना है तथा प्रत्येक प्रकरण और पद्य पाठक का कण्ठहार बनकर धर्म प्रभावना कर रहा है।

7. लेखक की प्रामाणिकता-

लेखक की प्रामाणिकता से ग्रंथ या रचना की प्रामाणिकता होती है। ''तीर्थोदय काव्य'' के कृतिकार वर्तमान के वर्द्धमान प.पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी के शिष्य आचार्य श्री आर्जवसागर जी हैं जो 41 वर्षों से

जैनागम का स्वाध्याय कर रहे हैं, तपोनिष्ठ हैं, इस प्रामाणिकता के कारण ''तीर्थोदय काव्य'' में धर्म प्रभावना का गुण पाया जाता है। सभी जिज्ञासु इसे श्रद्धा से पढ़ते हैं।

8. काव्य की गेयता-

काव्य के दो भेद हैं- गद्य काव्य तथा पद्य काव्य कविता गद्य में भी लिखी जाती है और पद्य भी। पर गेयता पद्य में ही पायी जाती है। जब कवि कविता लिखता है तो उसे गीत कहते हैं किन्तु वही कविता जब संत लिखता है तो वह संगीत बन जाती है। यही कारण है कि ''तीर्थोदय काव्य'' में सर्वत्र अनिर्वचनीय आनन्द प्रदायी संगीत सुनाई देता है। जब आप किसी भी पद्य को स्वर और लय के साथ पढ़ेंगे तो उससे सारे गम भुलाने वाली सा-रे-ग-म सुनाई देगी। कारण यह है इसे आचार्य श्री ने भरी सभाओं में गाया है, सुनाया है। अगर उन्हें कहीं न्यूनता अनुभव में आयी तो परिमार्जित कर लिया गया है। ऐसा एक बार नहीं, अनेक बार हुआ है और अंततः वह गेयता की कसौटी पर शत-प्रतिशत शुद्धता को प्राप्त है। एक उदाहरण-

जिनवर ने जो कहा तत्त्व है, यही रहा अरु इसी तरह।
नहीं अन्य है, अन्य तरह ना, दृढ़ जाने जो उसी तरह॥
सब जग के उपकार-रूप में, जो जिन-आगम मुनिजन हैं।
उनमें ना सन्देह करें जो, निःशंकित वे भविजन हैं॥ 73॥[6]

'गेयता' काव्य का सौन्दर्य है और धर्मप्रभावना का प्रबल कारण है। ज्ञानोदय, जिसे ''मेरी भावना'' की लय में भी पढ़ा जा सकता है, उसमें ''तीर्थोदय काव्य'' की रचना की गई है। प्रत्येक पद्य चुस्त और दुरुस्त है, भावाभिव्यक्ति में सक्षम है और धर्म प्रभावना कारक है।

9. भाषा की बोधगम्यता-

''तीर्थोदय काव्य'' की भाषा में सर्वत्र बोधगम्यता पायी जाती है। ''तीर्थोदय काव्य'' यद्यपि सैद्धांतिक रचना है, उसमें धार्मिक-पारिभाषिक शब्द आना स्वाभाविक है किन्तु आचार्य श्री ने काव्य कौशल से उसे सरल भाषा में वर्णित कर सर्वजन सुलभ बना दिया है। जो धर्म प्रभावना के लिये उपयुक्त है। भाषा में कृत्रिमता या जटिलता नहीं है। विशेष के लिये आलेख के कलापक्ष का अवलोकन करें।

10. विषय वस्तु की सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक उपयोगिता-

''तीर्थोदय काव्य'' में जो विवेच्य विषय हैं वे सभी के लिए सर्वदा पठनीय एवं आचरणीय हैं, दैनिक जीवन से संबंध रखते हैं। यथा-सच्चे देव-शास्त्र-गुरु की पहचान, मूढ़ताएँ, सप्त व्यसन, अभक्ष्य, रात्रिभोजन, जल-गालन विधि इत्यादि से प्रारम्भ कर सम्पूर्ण श्रावकाचार एवं मोक्ष तक का कथन इसमें सब ग्रंथों का सार है। यह आल-इन-वन है। सबके पढ़ने-सुनने एवं आचरणीय विषयों का सागर है। अतः यह काव्य धर्म प्रभावना के लिये उत्तम साधन है।

11. अधुनातन उदाहरणों द्वारा कथ्य की पुष्टि-

अधुनातन उदाहरणों द्वारा कथ्य की पुष्टि एवं दृष्टान्त शैली द्वारा विषय को ग्राह्य बना दिया है। कहावतों-मुहावरों का प्रयोग भी विषय को आत्म-सात् करने में सहायक है, जो धर्म प्रभावना के लिए जरूरी है। ऐसी और भी अनेकानेक विषेताएँ हैं। विशेष क्या कहें। यह काव्य शक्कर का वह मोदक है जिसका कण-कण मिष्ट है। यह काव्य सबसे कहता है-

''तीर्थोदय'' से लोक में, शांति-सुधा हो पूर।
काव्य पढ़ें हम नित्य यह, शिवसुख फिर ना दूर॥ 698॥[7]
''तीर्थोदय' से सोलह भावन का - सन्देश सदा गायें।
सद्दर्शन अरु बोध चरित पा, पुण्य खजाना सुख पायें॥
तीर्थंकर भी बनकर जिनकी - जन कल्याणी वाणी हो।
पान करें जो वसु विधि क्षयकर, मोक्ष सुखी वे प्राणी हों॥ 704॥[8]

मंगलकामना-

प.पूज्य आचार्य श्री रत्नत्रय की साधना पर अग्रसर होते हुये, सोलह कारण भावनाओं को भाते हुए तीर्थंकर बन मानव जीवन में परम लक्ष्य सिद्धत्व को प्राप्त करें एवं पूज्यश्री की पावन लेखनी से अविराम नित नूतन नैतिकता एवं सिद्धांतों से परिपूर्ण कृतियाँ प्रसूत होती रहें। भगवान महावीर का शासन जयवंत हो एवं आचार्य श्री आर्जवसागर यावच्चन्द्र दिवाकरौ जीवंत और जयवंत रहें, यही हार्दिक शुभकामना है।

पू. आचार्य श्री के चरणों में त्रिकाल नमोऽस्तु।

36, भाग्यरेखा, अमृत इन्क्लेव, अयोध्या बायपास, भोपाल(म.प्र)462041
मो.9893072575, 0755-4292575

संदर्भ ग्रन्थ-

1. आचार्य समन्तभद्र; रत्नकरण्डक श्रावकाचार; गाथा-18
2. आचार्य आर्जवसागर; तीर्थोदय काव्य; मंगलाचरण
3. वही; पद्य-11
4. वही; पद्य-694
5. वही; पद्य-695
6. वही; पद्य-73
7. वही; दोहा-698
8. वही; पद्य-704

क्षमा करो, धारो क्षमा, क्षमा धर्म का नाम।
आर्जव गुरु आशीष पा, मिले मोक्ष शिव धाम॥

समाचार

-सहसंपादकीय

बहिन ऋषिका जैन, दमोह

राजधानी भोपाल से महानगर इंदौर की ओर विहार

आचार्य भगवन् श्री 108 आर्जवसागर जी महाराज ससंघ का मंगल विहार दिनाँक 16 मई 2025 को पुण्यधाम से भानपुर होते हुये 19 मई को लालघाटी नंदीश्वर मंदिर होते हुये बैरागढ़ कला की ओर हो गया। दिनाँक 21 जून को आचार्य भगवन् का मंगल विहार खजूरी सड़क, फंदा, पचामा, सीहोर, आदिनाथ तीर्थधाम अमलाहा, कोटरी, आष्टा, डोंड़ी, मेहतवाड़ा, सोनकच्छ, देवघर, हाटपिपलीया, करनावत, डबल चौकी होते हुये इंदौर की ओर हो गया।

उदय नगर का हुआ पुण्य उदय मिला आचार्य भगवन् का 2025 का चातुर्मास

उदयनगर, इंदौर वासियों के बार-बार निवेदन और भक्ति भावना को देखकर आचार्य भगवन् ससंघ के पावन चरण उदयनगर इंदौर में पड़े ।

दिनाँक 2 जुलाई 2025 को आचार्य भगवन् श्री 108 आर्जवसागर जी महाराज ससंघ की भव्यातिभव्य ऐतिहासिक अविस्मरणीय मंगल आगवानी उदयनगर इंदौर में की गई। जगह-जगह गुरुदेव का पाद-प्रक्षालन किया गया और मंगल आरती उतारी गई। गुरुदेव ससंघ ने मंदिर जी में विराजित भगवान चन्दाप्रभु और अभिनंदन नाथ भगवान की विशाल एवं भगवान महावीर की अतिमनोज्ञ प्रतिमा के दर्शन किये तदुपरांत मंगलाचरण पूर्वक, गुरुदेव का गुणगान किया गया। श्री दिगंबर जैन सर्वोदय धार्मिक एवं पारमार्थिक ट्रस्ट एवं प्रबंधकारिणी समिति द्वारा गुरु चरणों का पाद प्रक्षालन किया गया एवं चन्दाप्रभु महिला परिषद, उदयनगर द्वारा गुरु के करकमलों में शास्त्र दान किया गया। एवं निवेदन किया गया कि हे गुरुदेव! आपके पावन सान्निध्य में आगामी अष्टाह्निका पर्व में श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन एवं आपका इस वर्ष का पावन वर्षायोग का लाभ हम उदयनगर वासियों को प्राप्त हो। पश्चात् इंदौर की अनेक कॉलानी से पधारे भक्तों ने गुरु चरणों में श्रीफल भेंट कर आशीर्वाद ग्रहण किया। तदुपरांत आचार्य श्री की दिव्य देशना का लाभ पाण्डाल में उपस्थित संपूर्ण जनसमूह को प्राप्त हुआ।

सिद्धों की आराधना का महा अनुष्ठान सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन

उदयनगर इंदौर में गुरुदेव ससंघ के मंगल सान्निध्य में दिनाँक 3 जुलाई से 10 जुलाई 2025 तक अष्टाह्निका महापर्व के पावन सुअवसर पर श्री 1008 सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया गया। घटयात्रा एवं ध्वजारोहण पूर्वक विधान का शुभारंभ किया गया।

विधान में प्रतिदिन आचार्य भगवन् के मंगल सान्निध्य में इन्द्र-इन्द्राणियों ने बड़े ही भक्ति भाव पूर्वक पूजा-अर्चना की एवं गुरुदेव की मंगलमयी वाणी सुनने का लाभ भी प्राप्त किया। विधान के अंतिम दिवस हवन उपरांत विशाल शोभायात्रा पूर्वक विधान का समापन किया गया एवं पुनः गुरुदेव से पावन चातुर्मास हेतु निवेदन किय गया।

ऐतिहासिक अविस्मरणीय अभूतपूर्व

मंगल कलश स्थापना कार्यक्रम

दिनाँक 20 जुलाई 2025, रविवार को उदयनगर इंदौर में आचार्य भगवंत श्री आर्जवसागर जी महाराज के पावन चातुर्मास की मंगलमयी कलश स्थापना कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें देश के कोने-कोने से भक्तों ने आकर कार्यक्रम में पधारकर गुरुदेव का मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया।

दोपहर 2:00 बजे से संघस्थ बहनों द्वारा मंगलाचरण पूर्वक कार्यक्रम की शुरुआत की गई उपरांत महिलामण्डल की महिलाओं द्वारा भजन प्रस्तुति दी गई।

तमिलनाडु, चेन्नई, अहमदाबाद, दिल्ली, सूरत, दुबई, दमोह, सागर, पथरिया, हाटपिपल्या, अजमेर, चाँदखेड़ी, पिड़ावा आदि महानगरों से पधारे अतिथियों द्वारा चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्ज्वलन किया गया तथा श्री दि. जैन धर्मोदय एवं पारमार्थिक ट्रस्ट, उदयनगर कमेटी द्वारा गुरुदेव का पाद प्रक्षालन किया गया। श्रीमान् मनीष जी-पूर्णिमा जैन, सकल दि. जैन समाज पिड़ावा जनों ने गुरु करकमलों में शास्त्रदान किया। तदुपरांत सकल दिगंबर जैन समाज, इंदौर की प्रत्येक मंदिर कमेटियों द्वारा गुरुदेव की मंगलमयी पूजन की गई। फिर वह घड़ी आ गई; जिसका सभी को इंतजार था। कलश स्थापन कर्त्ताओं का चयन किया गया। एवं रत्नत्रय, धर्म प्रभावना, वात्सल्य कलश, पर्व कलश, रत्नकलश, आचार्य शांतिसागर कलश आदि कलशों सहित अनेक कलशों की स्थापना की गई। तदुपरांत आचार्य भगवन् की अमृतमयी मंगल वाणी सुनने का लाभ भी अपार जनसमूह को प्राप्त हुआ।

अंत में कमेटी द्वारा बाहर से पधारे अतिथियों का सम्मान भी किया गया एवं अतिथियों सहित संपूर्ण इंदौर जैन समाज का वात्सल्य भोज भी कराया गया।

मोक्षसप्तमी पर्व एवं रक्षाबंधन पर्व महोत्सव

आचार्य भगवन् श्री विद्यासागर जी महाराज से दीक्षित आचार्य गुरुदेव श्री 108 आर्जवसागर जी महाराज ससंघ के मंगल सान्निध्य में दिनाँक 30 जुलाई 2025 को भगवान पार्श्वनाथ के मोक्ष कल्याणक महोत्सव के पावन अवसर पर गुरुभक्त परिवार (निहार समिति) के युवाओं द्वारा सम्मेदशिखर की अति मनोरम सुंदर रचना की गई। प्रातःकाल 6:00 बजे से मंगलाष्टक, अभिषेक, शांतिधारा उपरांत भ. पार्श्वनाथ की संगीतमय पूजन की गई। एवं सम्मेद शिखर महामण्डल विधान भी बड़े ही भक्तिभाव पूर्वक संपन्न किया गया। आचार्य भगवन् की मंगलमयी देशना उपरांत निर्वाण लाडू समर्पण कार्यक्रम भी सानंद संपन्न हुआ।

दिनाँक 9 अगस्त 2025, दिन शनिवार को भगवान श्रेयांशनाथ के मोक्ष कल्याणक के शुभ पावन अवसर पर एवं रक्षाबंधन पर्व के पावन अवसर पर गुरु सान्निध्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें प्रातःकाल 6:30 बजे मंगलाष्टक, अभिषेक शांतिधारा की गई एवं विष्णुकुमार, अकम्पनाचार्य आदि 700 मुनिराजों की पूजन एवं रक्षाबंधन विधान का अयोजन भी किया गया। तुदपरांत आचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज ससंघ मंचासीन हुये। गुरुदेव की संगीतमय पूजन उपरांत शास्त्र दान आदि भी किया गया एवं आचार्य

गुरुदेव की दिव्य देशना सुनने का लाभ भी भव्यात्माओ को प्राप्त हुआ।

तीर्थंकर प्रकृति का संचय कराने वाला सोलहकारण पर्व में 16 दिवसीय लोककल्याण महामण्डल विधान

दिनाँक 11 अगस्त से 26 अगरूत 2025 तक श्रीमज्जिनेन्द्र लोककल्याण महामण्डल विधान का आयोजन गुरुदेव ससंघ के मंगल सान्निध्य में उदयनगर स्थित विशाल पाण्डाल में किया गया। जिसमें लगातार 16 दिन तक अनवरत विधान का आयोजन किया गया। जिसमें 16 सौधर्म इन्द्र और 16 चक्रवर्ती इन्द्रों का चयन किया गया। प्रतिदिन सोलहकारण पर्व के शुरुआत के 16 दिनों तक तीर्थंकर बनाने वाली सोलहकारण भावनाओं पर आधारित मंगलमयी विधान; जो एक महान आचार्य की लेखनी के माध्यम से रचा ऐसा विधान पं. पारस शास्त्री इंदौर के कुशल निर्देशन में किया गया।

लोक कल्याण महामण्डल विधान के उपरांत दिनाँक 27 अगस्त 2025 को आचार्य परमेष्ठी विधान का भी आयोजन बड़ी ही भक्तिभाव पूर्वक किया गया। तदुपरांत इसी बीच एक महान पर्व का आगमन हुआ....

दशलक्षण पर्यूषण महापर्व एवं श्रावक साधना संस्कार शिविर

गुरुदेव श्री 108 आर्जवसागर जी महा मुनिराज के पावन वर्षायोग 2025 के अंतर्गत उदयनगर इंदौर को महान पर्व पर्यूषण मनाने का सुअवसर प्राप्त हुआ। जिसके दौरान श्रावक साधना संस्कार शिविर का आयोजन भी किया गया। शिविर की दिनचर्या कुछ इस प्रकार रही। प्रातः 5 बजेः सुप्रभात स्तोत्र, विशेष ध्यान, जाप आदि प्रातः 6 बजे अभिषेक, शांतिधारा, पूजन, पर्व पूजन, विधान गुरु पूजन आदि, प्रातः 8:30 बजे आचार्य भगवन् के दश-धर्मों पर प्रवचन, प्रातः 10:00 बजे आहारचर्या दोपहर 12:00 बजे ध्यान, सामायिक आदि। दोपहर 2:00 बजे जैनागम की कक्षा, दोपहर 3:00 बजे तत्त्वार्थ सूत्र वाचन एवं दस अध्याओं का अर्थ रूप प्रवचन, सायं 5:30 बजे प्रतिक्रमण, स्तोत्र, पाठ आदि, सायं 7:15 बजे विद्वान/विदुषियों के प्रवचन, रात्रि 8:00 बजे शिक्षाप्रद धार्मिक प्रस्तुतियाँ एवं (रात्रि 10:00 बजे से प्रातः 5 बजे तक मौन)। इस प्रकार प्रतिदिन गुरु मुखारविंद से दश धर्मों पर विशेष प्रवचन का लाभ एवं महान ग्रंथ तत्त्वार्थ सूत्र (मोक्षशास्त्र) का अर्थ सुनने का लाभ सभी शिविरार्थियों को प्राप्त हुआ।

पर्यूषण पर्व के अंतिम दिन सभी शिविरार्थियों एवं उपवास करने वालों का सम्मान एवं क्षमावाणी महापर्व का कार्यक्रम भी सानंद संपन्न किया गया। इस तरह 32 दिनों तक षोडशकारण पर्व के दौरान धर्म की गंगा में भव्यों ने अवगाहन कर पुण्य का लाभ अर्जित कर अपने जीवन को सफल बनाया। दिनाँक 19-20 सितंबर को उदयनगर इंदौर में आयोजित अखिल भारतीय राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी की तैयारियाँ प्रारंभ की गईं। जिसमें करीब 45 विद्वानों को आमंत्रित किया गया। इस संगोष्ठी का विषय ''आचार्य श्री आर्जवसागर जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व'' रखा गया। तथा इस संगोष्ठी को देवी अहिल्या बाई विश्वविद्यालय, इंदौर तथा एकलव्य विश्वविद्यालय, दमोह के तत्वाधान में करने का निर्णय किया गया।

अखिल भारतीय राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी

विषय-आचार्य आर्जवसागर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

दिनांक-19, 20 सितंबर 2025

स्थान- उदयनगर, इंदौर(म.प्र.)

पावन प्रेरणा एवं मंगल सान्निध्य धर्म प्रभावक आचार्य श्री आर्जवसागर जी महामुनिराज ससंघ

संयोजक- डॉ. मुकेश जैन (विमल), इंदौर

संचालन- इंजी. बहिन ऋषिका जैन, दमोह

आमंत्रित विद्वान

1. डॉ. राकेश सिंघई (कुलपति, देवी अहिल्याबाई विश्वविदयालय), इंदौर
2. डॉ. पवन जैन (कुलपति, एकलव्य यूनिवर्सिटी), दमोह
3. डॉ. भागचंद जी भास्कर, नागपुर यूनिवर्सिटी
4. डॉ.शीतलचंदन जैन, जयपुर
5. डॉ. जयकुमार, मुजफ्फरनगर
6. डॉ. श्रेयांश जैन, बड़ौत
7. डॉ. ब्र. जयकुमार निशांत, टीकमगढ़
8. प्रो.ऋषभचंद जैन फौजदार, दमोह
9. डॉ. सुरेन्द्र भारती, बुरहानपुर
10. डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर
11. ब्र. धर्मेंद्र जैन, जयपुर
12. डॉ. ब्र. जिनेश मलैया, इंदौर
13. डॉ. ब्र.अनिल भैया प्राचार्य, जयपुर
14. प्रो. प्रशांत जैन, सेज यूनिवर्सिटी, भोपाल
15. डॉ. सत्येंद्र जैन, दमोह
16. डॉ. बारेलाल जी, रीवा यूनिवर्सिटी
17. डॉ. अनुपम जैन, इंदौर
18. डॉ. पुलक गोयल, जबलपुर
19. डॉ.पं. अभिषेक जैन, दमोह
20. डॉ.पं.अशीष जैन, प्राकृत विभाग, दमोह
21. डॉ. हुनुमान सिंह गुर्जर, जयपुर
22. डॉ. ज्योतिबाबू शास्त्री, जयपुर
23. डॉ. राजकुमार जैन, जयपुर
24. श्री पवन जैन प्रेमी, डोंगरगांव
25. इंजी. शोभित जैन, पुणे
26. डॉ. अजित जैन, भोपाल
27. डॉ. पंकज जैन, इंदौर
28. डॉ.पं. आशीष जैन, दमोह
29. पं. अशोक शास्त्री, इंदौर
30. पं.अनेकांत शास्त्री, इंदौर
31. डॉ. भरत शास्त्री, इंदौर
32. डॉ.बाहुबली जैन, इंदौर
33. डॉ. संजय जैन, इंदौर
34. डॉ.अल्पना मोदी, ग्वालियर
35. डॉ. अमित जैन वास्तु, इंदौर
36. डॉ. सारिका जैन, गुना
37. डॉ. ब्र. समता जैन मारोरा
38. डॉ. प्रीति सिंह, देवी अहिल्या बाई यूनिवर्सिटी, इंदौर
39. डॉ. संगीता महेता, इंदौर
40. ब्र.सुलेखा जैन, गोटेगांव
41. डॉ.ब्र.रजनी जैन, इंदौर
42. डॉ.अनुपमा मोदी, इंदौर
43. डॉ.सरिता जैन दोषी, इंदौर
44. डॉ. समता अनुराग जैन, इंदौर

आयोजक- श्री दिगम्बर जैन सर्वोदय धार्मिक एवं पारमार्थिक ट्रस्ट
एवं सकल दिगम्बर जैन मंदिर उदयनगर, इंदौर

दशलक्षण पर्व में दोपहर में स्वाध्याय एवं तत्त्वार्थसूत्रार्थ सुनते हुये श्रावकगण।

सम्यक् ध्यान शतक एवं ओम् योग ध्यान के माध्यम से गुरुदेव ने सिखाया भक्तों को ध्यान।

लोक कल्याण महामण्डल विधान के उपलक्ष्य में विशाल शोभायात्रा का पावन दृश्य।

आचार्य भगवन् के करकमलो में शास्त्रदान करते हुए सी कुमार तमिलनाडु।

लोक कल्याण विधान उपरांत षोडसकारण कलश स्थापन कर्त्ता राजेन्द्र-सरिता, सुनीता कामर्शियल इंदौर का सम्मान।

हबीबगंज मंदिर के दर्शनार्थ पधारे आचार्य भगवन् आर्जवसागर जी महाराज ससंघ।

आचार्य भगवन् श्री आर्जवसागर जी महाराज को पंचशील नगर भोपाल पधारने हेतु लेने आये मुनि श्री सुब्रतसागर, साक्ष्यसागर जी एवं निवृत्तसागर जी महाराज ससंघ।

आचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज ससंघ की स्वास्थ्य कुशलता पूछते हुये मुनि श्री सुब्रतसागर, साक्ष्यसागर जी एवं निवृत्तसागर जी महाराज ससंघ।

RNI Reg No MPHIN/2007/27127

ISSN: 3048-9954 (Print)

प्रति

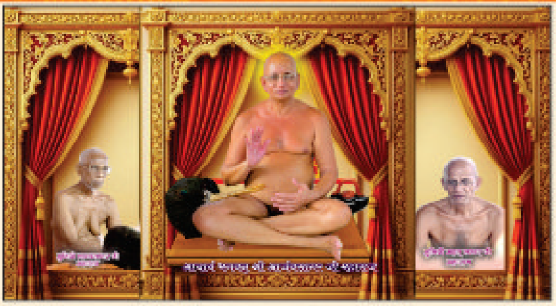

गुरुदेव ससंघ का 2025 का पावन वर्षायोग
उदयनगर, इंदौर (म.प्र.)

दशलक्षण पर्व के दौरान सम्मान प्राप्त करतीं हुई
बहिन इंजी. ऋषिका जैन, दमोह।

गुरुदेव की पावन प्रेरणा से स्थापित
आर्जव प्रभावना संघ भारत।

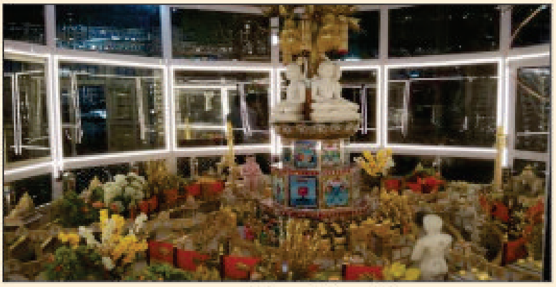

समवसरण मंदिर, इंदौर दर्शन।

उदयनगर में प्रथम बार गुरु सान्निध्य में
राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी का आयोजन।

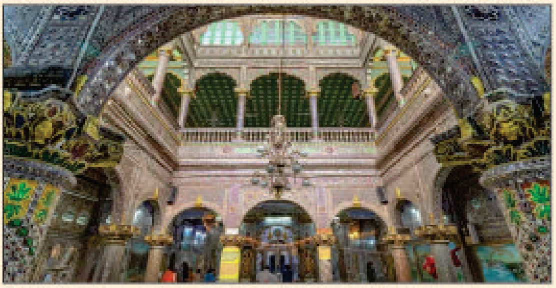

श्री दिगम्बर जैन काँच मंदिर, इंदौर दर्शन।

क्षेत्र गोम्मटगिरि (बाहुबली) दर्शन।

स्वामी एवं प्रकाशक : श्रीमती सुषमा जैन द्वारा मुद्रक : पवन कुमार जैन मो.:9826240876 द्वारा पारस प्रिन्टर्स, 207/4, सांईबाबा काम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं एमआईजी-8/4, गीतांजली काम्पलेक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित।

सम्पादक - डॉ. अजित कुमार जैन, MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लेक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003 फोन : 7222963457, 9425601161